NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

डाक टिकट की कहानी

सत्य प्रसाद चटर्जी



नेहरू बाल पुस्तकालय

डाक टिकट की कहानी

सत्य प्रसाद चटर्जी
अनुवाद
प्रेमनाथ चतुर्वेदी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण सज्जा : चिरंजीत लाल

ISBN 978-81-237-1084-6

पहला संस्करण : 1973
बीसवीं आवृत्ति : 2011 *(शक 1932)*

Romance of Postage Stamps *(English)*
Daak Ticket Ki Kahani *(Hindi)*

₹ 19.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित



डाक टिकट की कहानी

26 जनवरी, 1965 की शाम। न्यूयार्क से चलकर एक रुपहले और लाल रंग का बोइंग 707 विमान लंदन हवाई अड्डे पर उतरा। समाचार पत्रों के संवाददाताओं, फोटोग्राफरों और दूसरे लोगों की उत्सुक भीड़ ने उसे घेर लिया। हवाई-जहाज से श्री फिनबर केनी ब्रिटिश गयाना का एक सेंटवाला टिकट लेकर उतरे। इस टिकट का दो लाख पौंड (लगभग 46 लाख रुपये) का बीमा किया गया था। यह अंगरक्षक इस टिकट को खास तौर से स्टेनली गिबन्स कैटलाग शताब्दी प्रदर्शनी के लिए लंदन लाया था।

दूसरे दिन वह अमूल्य कागज का टुकड़ा सब जगह चर्चा का विषय बना हुआ था। सारे समाचार पत्रों ने बड़े-बड़े शीर्षक देकर उस टिकट के लंदन आने का समाचार छापा था। बी.बी.सी. ने उस टिकट के बारे में विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया। उसकी तस्वीर भी दिखलाई गई।

काले और गहरे फालसई रंग के उस पुराने कागज के टुकड़े में ऐसी क्या खास बात थी? इस टिकट की कहानी बड़ी मजेदार है।

पहले ब्रिटिश गयाना के डाक टिकट एक ब्रिटिश मुद्रक, वाटरलो एंड सन्स, द्वारा छापे जाते थे। 1856 में वहां टिकट खत्म हो गये। नई खेप अभी आ नहीं पायी थी। वहां के पोस्टमास्टर ने जल्दी से चार सेंट के डाक टिकट को अपने शहर में ही छपाने की व्यवस्था कर ली। चालू टिकट पर पहले ही वाला डिजाइन, उपनिवेश की मुहर और आदर्श वाक्य छापा गया। नये टिकट गहरे फालसई कागज पर काली स्याही से छापे गये थे, लेकिन इतनी घटिया किस्म के थे कि पोस्टमास्टर डर गया कि कहीं जाली टिकट न चालू हो जायें। उसने डाकघर के अधिकारियों को आदेश दिया कि बेचने से पहले एक एक डाक टिकट पर हस्ताक्षर करें।



सत्रह साल बाद ब्रिटिश गयाना के एक युवक एल बरनन वोगन को, जिसने अभी अभी डाक टिकटों का संग्रह करना शुरू किया था, अपने परिवार के पत्रों में एक सेंट वाला टिकट मिला जिस पर ई.डी. वाइट के दस्तखत थे। उसको इस बात का पता न था कि गलती से एक चार सेंटवाले टिकट पर एक सेंट छप गया था, और वह टिकट उसके पास ही था। उसने उस टिकट को निकाल लिया और दूसरे टिकटों के साथ अपने एल्बम में लगा लिया। वह टिकट अष्टकोणी और काफी मैला भी था। वोगन ने सोचा कि क्यों न इस टिकट को बेचकर अन्य सुंदर विदेशी टिकट खरीद लिये जायें। उसने बड़ी मुश्किल



से एक टिकट संग्रह करने वाले एन.आर.मैंकिनन को वह टिकट 6 शिलिंग (6.40 रु.) में बेच दिया। उसको क्या पता था कि एक दिन वही 6 शिलिंग में बेचा हुआ टिकट अमूल्य हो जायेगा।

पाँच साल बाद वही टिकट लिवरपूल के टिकट संग्रही टामस रिडपाथ ने 120 पौंड (2,760 रु.) में खरीदा। रिडपाथ ने उसी वर्ष उस टिकट को विख्यात फ्रांसीसी टिकट संग्रही फिलिप ला रेनोतिये वान फ़ेरारी को 150 पौंड (3,400 रु.) में बेच् दिया। खबर फैल गई कि वह एक दुर्लभ टिकट है। फ़ेरारी की मृत्यु (1917) के बाद उसका टिकट संग्रह सन् 1921 से 1925 के बीच पेरिस में नीलाम किया गया। उस नीलाम में अमेरिका के आर्थर हाइंड ने ब्रिटिश गयाना के एक सेंटवाले टिकट को 7,373 पौंड (1,68,886 रु.) में खरीदा (1922)।

1933 में आर्थर हाइंड का देहांत हो गया। उनका टिकट संग्रह उनकी संपत्ति का एक भाग था। उनकी विधवा ने दावा किया कि ब्रिटिश गयाना का एक सेंटवाला टिकट पति ने उनको भेंट कर दिया था। विधवा का दावा मान लिया गया। हाइंड की विधवा ने 1940 में उस टिकट को चालीस हजार डालर (5,20,000 रु.) में बेचा। आस्ट्रेलिया के एक संग्रही ने उसे खरीदा। उसने अपना नाम गुप्त रखा।

1970 में उस डाक टिकट को न्यूयार्क में दुबारा नीलाम किया गया और उसे श्री इर्विन वेनबर्ग और उनके सिंडीकेट ने 2,80,000 डालर की अत्यधिक कीमत पर खरीदा। जब वह डाक टिकट सिंडीकेट के अधिकार में था तभी मिस्टर इर्विन वेनबर्ग अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी में प्रदर्शनार्थ नयी दिल्ली, भारत में जनवरी '80 में लेकर आए। इसके तीन महीने बाद इस डाक टिकट को न्यूयार्क में फिर नीलाम किया गया और एक अज्ञात टिकट संग्रही ने 8,50,000 डालर (रु. 10,200,000) में खरीदा।



यह संसार का सबसे दुर्लभ टिकट माना जाता है। आगे

चलकर इस टिकट की क्या कीमत होगी, इसकी आप कल्पना कर सकते हैं।

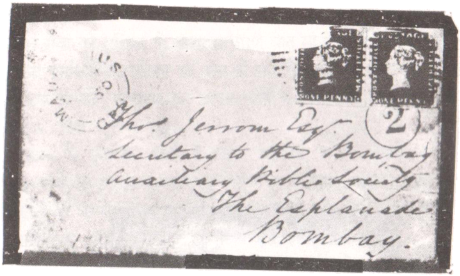
'पोस्ट आफिस', मोरिशस नामक विश्वविख्यात टिकटों की कहानी भी बड़ी मजेदार है। डाक टिकट जारी करने में हिंदमहासागर के छोटे से द्वीप मोरिशस का नंबर पांचवां है। उस देश ने 1847 में एक पेंस और दो पेंस के डाक टिकट जारी करने का निश्चय किया था। मोरिशस के गवर्नर की पत्नी लेडी गोम ने 30 सितंबर, 1847 को फेंसी ड्रेस नृत्य का कार्यक्रम बनाया। वे चाहती थीं कि निमंत्रण पत्रों पर देश के प्रथम टिकट लगाये जायें। समय कम था, अतः टिकटों को देश में ही छपाने की व्यवस्था की गयी।

उस छोटे से द्वीप में जे. बर्नार्ड ही प्लेट पर डिजाइन खोदने की कला जानता था। उससे टिकटों के डिजाइन खोदने को कह दिया गया। जो डिजाइन चुना गया था उसके बीच में महारानी विक्टोरिया के सिर का चित्र था। ऊपर 'पोस्टेज' लिखा था और नीचे कीमत। दाहिनी ओर 'मोरिशस' और बायीं ओर 'पोस्ट पेड' लिखा था। बर्नार्ड को आज्ञा दी गयी कि जल्दी से एक पेंस और दो पेंस के पांच-पांच सौ टिकट छाप दे। उसने डिजाइन तैयार करके टिकट छाप दिये, पर भूल से 'पोस्ट पेड' की बजाय 'पोस्ट आफिस' खुद गया। कहा जाता है कि 'मोरिशस', 'पोस्टेज', और 'कीमत' खोदने के बाद, पोस्टमास्टर ने जो कागज लिखकर बर्नार्ड को दिया था वह उससे गुम हो गया। बर्नार्ड को यह ध्यान नहीं रहा कि बायीं तरफ क्या खोदना है। पता लगाने वह पोस्टमास्टर के पास चल दिया। डाकखाने के पास पहुंचकर बर्नार्ड की निगाह भवन पर लिखे 'पोस्ट आफिस' शब्द पर पड़ी। उसे देखते ही उसके मन में आया कि यही शब्द बायीं ओर खोदने थे। बस वह पोस्टमास्टर से बिना मिले ही लौट गया। इस प्रकार 'पोस्ट पेड' की बजाय 'पोस्ट आफिस' शब्द उन टिकटों पर छप गया।

इन टिकटों की बिक्री 20 सितंबर, 1847 से आरंभ हुई। बरसों तक उन टिकटों पर छपी भूल को किसी ने पकड़ा ही नहीं। 1864 में बोर्दो के एक व्यापारी की पत्नी श्रीमती बोरचर्ड को अपने पति की चिट्ठियों में यह 12 दुर्लभ टिकट मिले। कहा जाता है कि उन दुर्लभ टिकटों की 26 प्रतियां मौजूद हैं। एक पेंसवाले 14 टिकट हैं और 2 पेंसवाले 12

टिकट। जब भी इन टिकटों की नीलामी हुई है, उनकी कीमत बढ़ती ही गयी है।

इनमें सबसे श्रेष्ठ है एक लिफाफा जिस पर एक-एक पेंस के दो टिकट लगे हैं। यह लिफाफा बंबई के थोस जेरोम नाम के किसी व्यक्ति के नाम 4 जनवरी, 1850 को भेजा गया था। भारत के एक बाजार में यह मिला और इसे हावर्ड नाम के एक व्यक्ति ने 50 पौंड (1,100 रु.) में खरीदा। उसने लंदन में उसे 1,600 पौंड (36,800 रु.) में बेचा।



1906 में वह 2,200 पौंड (50,600 रु.) में बिका। प्रसिद्ध टिकट संग्रहकर्ता ए.एफ. लिचस्टेंस्टाइन ने 1917 में उस लिफाफे को खरीद लिया। उस संग्रहकर्ता की मृत्यु (1947) के बाद उसकी पुत्री उस प्रसिद्ध लिफाफे की स्वामिनी बनी। 1968 में न्यू ओरलियंस की फर्म रेमण्ड एच. वेल एंड कंपनी को यह लिफाफा 3,80,000 डालर (49,40,000 रु.) में बेचा गया। कितनी अजीब बात है कि जरा सा कागज का टुकड़ा इतना मूल्यवान हो गया।

प्रसिद्धि पाने वाले डाक टिकट यही नहीं हैं, और भी हैं। छपाई में किसी तरह की गलती रह जाने के कारण अनेक टिकट प्रसिद्ध और दुर्लभ हो गये हैं। किशोर डाक

टिकट संग्रहकर्ताओं के लाभ के लिए मैंने इस पुस्तक में यह बताया है कि डाक टिकटों का कैसे प्रचलन हुआ, कैसे उनका संग्रह आरंभ हुआ, उसका क्या लाभ है, कैसे और क्या संग्रह करना चाहिए। टिकटों की छपाई के तरीकों और डाक टिकट के बारे में कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें भी बतायी हैं।







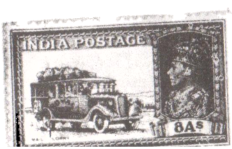


डाक-सेवा की कहानी

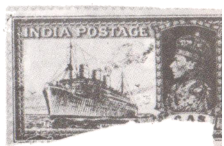
डाक-सेवा की सुविधा तो आज साधारण बात मानी जाती है। चिट्ठियां भेजना और उनको पाना हमारे दैनिक जीवन का अंग हो गया है। पर यह बात कुछ ही लोग जानते होंगे कि इस विशाल व्यवस्था का अनेक वर्षों में कैसे विकास हुआ और डाक-सेवा सबके लिए कैसे सुलभ हुई।

साम्राज्य के विभिन्न भागों में संचार व्यवस्था बनाये रखना जरूरी था। इसी आवश्यकता के कारण डाक-सेवा का आरंभ हुआ। डाक-सेवा के बल पर सम्राट को विभिन्न क्षेत्रों की घटनाओं का पता चल जाता था। पहले डाक-सेवा राजाओं के लिए ही थी। आज यह गरीब-से-गरीब नागरिक की सेवा करती है।

भारत, मिस्र, चीन और ग्रेट ब्रिटेन में डाक हरकारे, निश्चित मार्गों पर चलते थे। अब संचार व्यवस्था में काफी सुधार हो गया है। विमान, रेलवे और मोटर-सेवा तेजी के साथ चिट्ठियों को उनके पतों पर पहुंचा देती हैं। डाक सेवा में मनोरंजक कहानी तो डाक हरकारे की है। जहां किसी प्रकार की संचार व्यवस्था नहीं, वहां डाक हरकारे चिट्ठी पहुंचाते हैं। वे आपकी चिट्ठियों को हिफाजत से आप तक पहुंचाने के लिए जंगलों से गुजरते हैं, पहाड़ों पर चढ़ते हैं, नदियों को पार करते हैं, जंगली पशुओं और डाकुओं का मुकाबला करते हैं।









भारत में डाक-व्यवस्था 1296 से चालू है। सेना के समाचार निरंतर पाने के लिए पठान शासक अलाउद्दीन खिलज़ी ने घोड़ों और पैदल की डाक व्यवस्था कायम की थी। शेरशाह के समय में, जिसने बहुत थोड़े काल के लिए ही शासन किया था, (1541-1545) इस व्यवस्था में बहुत सुधार किया गया। उसने इन पांच सालों में बंगाल से सिंध तक 2,000 मील लंबी एक सड़क बनवायी, और उसके दोनों किनारे सरायें बनवायी। सारे राज्य में उसने घोड़ों द्वारा डाक लाने-ले-जाने की व्यवस्था की। हर सराय पर दो घोड़े तैयार खड़े रहते थे जिससे डाक को जल्दी से जल्दी आगे ले जाया जा सके। अकबर के शासनकाल में (1556-1605) परिवहन की व्यवस्था में एक और सुधार हुआ अब घोड़ों के अलावा ऊंटों का भी इस्तेमाल किया जाने लगा। कहा जाता है कि मैसूर के राजा चिक्कदेव ने 1672 में अपने पूरे राज्य में नियमित डाक सेवा की व्यवस्था की थी।







1688 तक ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव मद्रास, बंबई और कलकत्ता तक फैल गया था। तब्र कंपनी ने डाक-सेवा सुधार के लिए कदम उठाये। चिट्ठियों का आना-जाना जरूरी था। अतः बंबई और मद्रास के बड़े डाकखानों और अन्य स्थानों पर छोटे-छोटे डाकखाने खोले गये। 1766 में लार्ड क्लाइव ने डाक-सेवा में और सुधार किया। तब तक यह सेवा केवल सरकारी काम के लिए थी। 1774 में डाक-सेवा का लाभ जनता को मिलने लगा। तब डाक की कम-से-कम दर प्रति सौ मील के लिए दो आना थी। डाक महसूल चुकाने के लिए दो आने के ताँबे के विशेष टोकन टकसाल में तैयार होते थे।



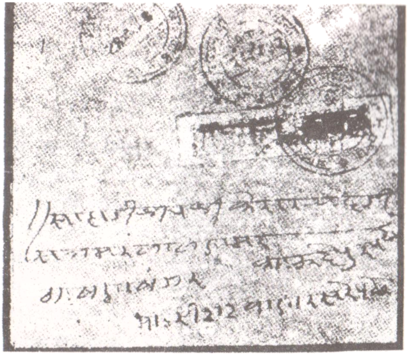
डाक महसूल डाकखाने में चिट्ठी डालते समय चुकाना पड़ता था। डाक महसूल देने पर चिट्ठियों पर 'पोस्ट पेड' अथवा 'फुल पोस्ट पेड' आदि की मुहरें लगा दी जाती थीं। जिन चिट्ठियों का महसूल चुकाया नहीं जाता था उन पर अंग्रेजी में 'बेयरिंग', 'पोस्ट नाट पेड' अथवा 'अनपेड' की मुहर लगाई जाती थी। ऐसी चिट्ठियों का डाक-महसूल पाने वाले से वसूल कर लिया जाता था।

सरकार ने डाक-सेवा का काफी विकास कर दिया था, फिर भी कुछ लोग गैरसरकारी तौर पर चिट्ठियां एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का धंधा चलाते रहे। ये गैरसरकारी डाक-सेवाएं सरकारी डाक-व्यवस्था के साथ सफलता से मुकाबिला करती रहीं।



1837 में जब पहला पोस्ट आफिस अधिनियम पास किया गया तो डाक-सेवा में





बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। यह अधिनियम सिर्फ डाक-व्यवस्था को आधुनिक बनाने के लिए ही नहीं पास किया गया, बल्कि इससे सरकार को सारे भारत में डाक-सेवा चलाने का पूरा एकाधिकार भी मिल गया। गैरसरकारी सेवाओं को गैर कानूनी ठहरा दिया गया।



सिंह और ताड़ वृक्ष



डाक टिकट का जन्म

डाक टिकट का जब तक चलन नहीं हुआ था, तब तक चिट्ठियों का महसूल या तो भेजने वाले को पेशगी देना पड़ता था, या पाने वाले को बाद में। चिट्ठी का महसूल दूरी के अनुसार लिया जाता था। चिट्ठियों पर कई तरह की मुहरें लगायी जाती थीं। किसी पर महसूल प्राप्ति की मुहर लगती थी, तो किसी पर महसूल न प्राप्त होने की। तब तक लिफाफों का चलन नहीं हुआ था। चिट्ठी को मोड़कर उस पर चेपी लगा दी जाती थी और पीछे पता लिख दिया जाता था। डाक-सेवा में कई सुधार हुए, पर जनता की मांग के अनुसार वह सस्ती और व्यवस्थित न थी।

1835 की बात है। रोलैंड हिल ने इंगलैंड की कर-स्थिति का अध्ययन किया। उन्होंने यह महसूस किया कि डाक महसूल की दरें तो चढ़ी हैं, पर उससे होने वाली आय गिर गई है। उनको पता चला कि अधिकांश चिट्ठियां बिना महसूल दिये भेजी जाती हैं और उनमें से बहुत सी चिट्ठियों को पाने वाले लेते नहीं। डाक सेवा का किस तरह से दुरुपयोग किया जाता था, इसके बारे में रोलैंड हिल ने एक मज़ेदार कहानी सुनी थी।

एक दिन एक नवयुवक टहलने जा रहा था। उसने देखा कि डाकिया छोटे से मकान में रहने वाली किसी महिला के नाम की चिट्ठी लाया। डाकिये ने चिट्ठी के महसूल के तौर पर महिला से एक शिलिंग मांगा। महिला ने उदास मुद्रा में गर्दन हिलाकर चिट्ठी लौटा दी। युवक ने समझा कि महिला गरीबी के कारण महसूल का एक शिलिंग देने में असमर्थ है, अतः उसने, मना करने पर भी, एक शिलिंग डाकिये को देकर पत्र ले लिया। जब डाकिया कुछ दूर निकल गया तब महिला ने युवक से पूछा कि तुम्हारा एक शिलिंग देना बेकार ही रहा और चिट्ठी खोलकर दिखा दिया कि वह केवल कोरा कागज था। महिला ने बताया कि मेरा पुत्र इसी ढंग से चिट्ठी भेजता है। डाक महसूल न तो वह देता है और न मैं। चिट्ठी के कोरे कागज से मैं समझ जाती हूं कि मेरा पुत्र सकुशल है।

डाक महसूल की ऊंची दरों के कारण लोग इस तरह के तरीके अपनाते थे।

रोलैंड हिल ने हिसाब लगाया कि लंदन से एडिनबरा को एक पत्र ले जाने में एक पेनी का छत्तीसवां भाग खर्च होता था। 1837 में उन्होंने 'डाक-घर सुधार' नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की। उनका कहना था कि डाक महसूल कम किया जाये, डाक-दर एक सी हो, दूरी का उस पर कोई असर न पड़े और डाक महसूल पेशगी ले लेना अनिवार्य कर दिया जाये। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि टिकट छपा हुआ लिफाफा जारी किया जाना चाहिए। जो व्यक्ति अपने लिफाफे काम में लाना चाहें वे छोटी चिपकनी चिप्पियां खरीद कर उन्हें अपनी चिट्ठियों पर लगा दें।

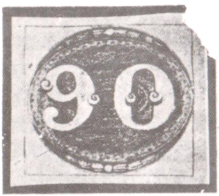
ग्रेट ब्रिटेन में 10 जनवरी 1840 को यह नियम स्वीकार कर लिया गया कि आधा औंस वज़न की चिट्ठी का महसूल एक पेंस लिया जाये। पत्र कितनी दूर जायेगा इससे

डाक महसूल में कोई फर्क न पड़े। पेशगी डाक के रूप में चिट्ठियों पर चिप्पियां चिपका दी जायें।

डाक टिकटों का प्रयोग कैसे और किस तरह किया जाये इसकी जानकारी के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया जाये। सुझाव भेजने वालों को नीचे लिखी बातों का ध्यान रखने को कहा गया था:

1. टिकट को उंगलियों से पकड़ना सुविधाजनक हो।
2. टिकट जाली न बनाया जा सके।
3. डाकघर पर उसकी आसानी से परीक्षा हो सके।
4. डाक टिकटों के उत्पादन और प्रसार में होने वाले खर्च का अंदाज।

इस प्रतियोगिता में 2,600 से अधिक प्रविष्टियां अथवा 'एसे' प्राप्त हुए। चार व्यक्तियों को 100-100 पौंड (2,300 रु.) के इनाम दिये गये पर जो 'एसे' (डाक टिकट का चित्र) प्राप्त हुए उनमें से एक का भी प्रयोग नहीं हुआ। अंत में रोलैंड हिल और परकिंस, बेकन एंड कंपनी के बीच लिखा-पढ़ी के बाद जारी हुए प्रथम टिकट का नमूना तय हुआ। संसार के प्रथम डाक टिकट 'पैनी ब्लैक' (काला पैनी) का चलन 6 मई 1840 से जारी हुआ।



ब्राज़ील का 'बुल्स आई'

पेशगी डाक महसूल कर लेने के कारण डाक महसूल उगाहने के कई झंझट समाप्त हो गये। उससे डाक महसूल की आय में घाटे का भय दूर हो गया। ब्रिटेन में जब डाक टिकट चलने का प्रयास सफल हुआ, तब अन्य देश भी डाक टिकट जारी करने लगे। डाक टिकट जारी करने वाला दूसरा देश ब्राजील था (1843)। उसी साल जूरिख और जेनेवा प्रदेशों ने अपने-अपने टिकट जारी किये। 1845 में बासेल प्रदेश ने टिकट चलाये। 1847 में अमरीका, त्रिनिदाद



बेसल डव (कपोत)

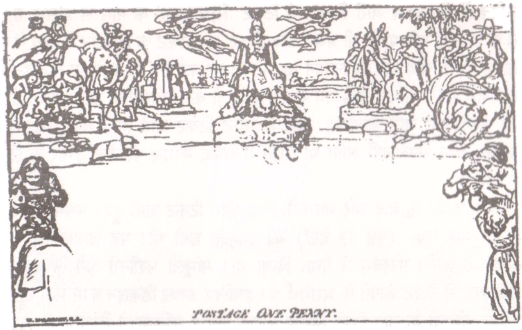


ज़ूरिख



लेडी मैकलियॉड

और मोरिशस ने अपने-अपने डाक-टिकट जारी किये। फ्रांस, बेलजियम और बवेरिया ने 1849 में टिकटों का चलन शुरू किया। 1850 से तो अनेक देश टिकट जारी करने लगे।



मलरेडी कवर—विलियम मलरेडी के द्वारा आकल्पित प्रथम पूर्व-प्रदत्त लिफाफा, जिसे ग्रेट ब्रिटेन में 1840 में जारी किया गया।



भारतीय डाक टिकट का इतिहास

भारत में सिंध के कमिश्नर बार्टले फ्रेरे ने 1852 में सिंध प्रांत के लिए कागज के डाक टिकटों का चलन जारी किया। वे टिकट 'सिंध डाक' के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे भारत के ही नहीं, एशिया के भी प्रथम डाक टिकट थे। टिकट के डिज़ाइन में बीच में ईस्ट इंडिया कंपनी के चौड़े तीर का निशान था। टिकट पर कई रंगों के उभरे हुए डिज़ाइन थे। पहले सिंदूरी रंग के टिकट छापे गये थे। वे बहुत ही कम समय तक चले क्योंकि उनका कागज जल्दी कट जाने वाला था। बाद में सफेद टिकट जारी हुए। सफेद कागज पर टिकट का उभार साफ नहीं आता था। अंत में सफेद कागज पर नीले उभार के टिकट छापे गये।

'सिंध डाक' के बाद सारे भारत के लिए आम टिकट जारी हुए। प्रथम टिकट पर 'शेर और ताड़ वृक्ष' (पृष्ठ 13 देखें) की आकृति छपी थी। यह डिज़ाइन कलकत्ता टकसाल के कर्नल फोरबेस ने तैयार किया था। मामूली मशीनरी होने के कारण वे अधिक मात्रा में टिकट छापने में असमर्थ थे। इसलिए उनका डिज़ाइन काम में न आया।

इस परीक्षण के बाद डिप्टी सर्वेयर जनरल कैप्टन थूलियर ने लिथोग्राफी से डाक टिकटों को छापने का काम हाथ में लिया। उत्साह और मेहनत से सितंबर 1854 में उन्होंने भारत के प्रथम डाक टिकट छाप दिये। एक टिकट अधन्ने का था और उसका रंग

नीला था। उस पर महारानी विक्टोरिया का सिर अंकित था। बाद में एक आने, दो आने और चार आने के टिकट भी छापे गये।

अधन्ने के नीले टिकट छापने से पहले उसी मूल्य के लाल टिकटों की 900 शीटें छापी गयीं थी। उन लाल टिकटों पर किनारे के मेहराबों का स्वरूप कुछ भिन्न था। बाहर से आने वाली सिंदूरी स्याही के खत्म हो जाने के कारण यह लाल टिकट अधिक न छापे जा सके। उन टिकटों की छपाई बेकार रही। इसलिए उन सबको नष्ट कर दिया गया। उस लाल टिकट के नमूने की एक प्रति हमारे राष्ट्रीय डाक टिकट संग्रहालय में सुरक्षित है। अधन्ने वाले यह लाल टिकट '$9^{1}/_{2}$ आर्चेस' (मेहराब) के नाम से मशहूर हैं। कैप्टन थूलियर ने जो टिकट छापे थे, उन पर पीछे गोंद न थी, और टिकटों को अलग-अलग करने के लिए उन पर दनदाने या छेद भी नहीं थे।

भारतीय टिकटों को बाद में लंदन की फर्म टामस डि ला रो एंड कंपनी ने 1856 से









1926 तक छापा। शासक के बदलने पर टिकटों का डिज़ाइन बदल दिया जाता था। इस प्रकार तब भारतीय टिकटों पर बारी-बारी से महारानी विक्टोरिया, एडवर्ड सप्तम, जार्ज पंचम और जार्ज षष्टम की छवि अंकित थी। अलग-अलग मूल्य के डाक टिकट अलग-अलग रंग में छापे जाते थे। 1926 में इंडिया सीक्यूरिटी प्रेस की स्थापना नासिक में हुई और डाक टिकट छापने का दायित्व उस प्रेस को सौंप दिया गया।

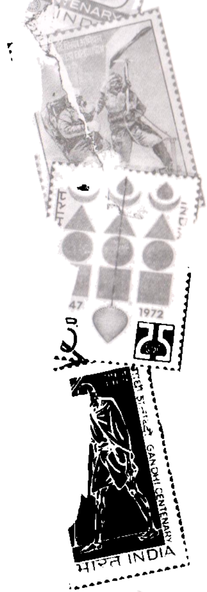
नई दिल्ली के उद्‌घाटन के अवसर पर 1931 में प्रथम बार भारत में चित्रमय टिकट जारी किये गये थे। उन टिकटों पर नई दिल्ली के अनेक दृश्य चित्रित थे। बाद में जार्ज पंचम की रजत जयंती (1935) के अवसर पर स्मारक टिकट जारी हुए। 1937 में डाक ले जाने के विभिन्न तरीकों को दिखाने वाले टिकट चालू हुए। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति की याद में चार विशेष टिकट 1946 में जारी किये गये थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारत में सामान्य प्रयोग के और स्मारकमालाओं के, अनेक टिकट जारी किये गये। इन टिकटों पर भारतीय जीवन और संस्कृति की विभिन्न झाकियां दिखलाई गयी हैं। इनमें हमारे वन्य जीवन, धर्म, पंचवर्षीय योजना संबंधी विषय, बच्चों से संबंधित सामाजिक और शैक्षणिक विषय, ऐतिहासिक घटनाएं, एवरेस्ट-विजय आदि

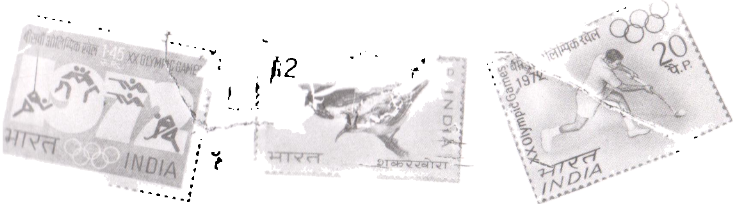








को चित्रित किया जा चुका है। राष्ट्रीय नेताओं और स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों, दार्शनिकों, और विचारकों, शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों को भी इसी प्रकार सम्मानित किया गया है। उनके सम्मान में अनेक डाक-टिकट जारी किये जा चुके हैं। टिकटों को अधिक आकर्षक और रंग-बिरंगे बनाने के लिए, नासिक सीक्यूरिटी प्रेस में, एक बहुरंगी छपाई की मशीन, मार्च 1972 में, लगा दी गयी है। अब भारतीय मुखौटों, लघुचित्रों, भारतीय नृत्यों आदि की रंगीन टिकट मालाएं भी प्रकाशित की गयी हैं। भारतीय डाक-टिकटों के इतिहास में यह विशेष घटना होगी। महत्व की दो घटनाएं और हैं जिनको ध्यान में रखना जरूरी है।

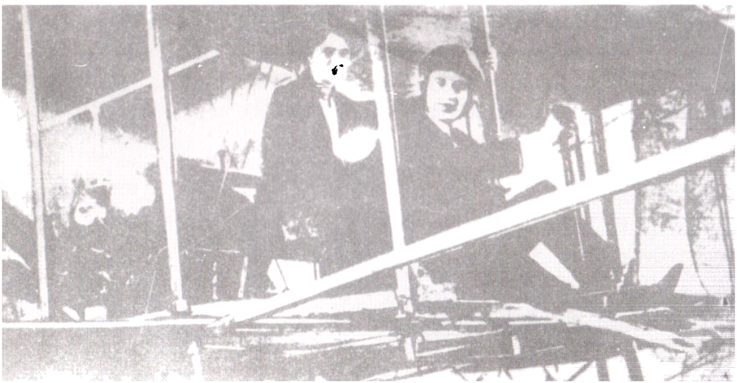


यह 1929 की बात है। भारत ने ही सबसे पहले विमान से डाक भेजी थी। 18 फरवरी 1911 को 6,500 चिट्ठियां और पोस्ट कार्ड विमान द्वारा इलाहाबाद से नैनी भेजे गये थे। राष्ट्र मंडलीय देशों में भारत ही पहला देश था जिसने हवाई डाक के विशेष टिकट-सेट जारी किये थे।





दो यात्रियों के विमान में श्री पिक्यू। इसी विमान से 1911 में प्रथम बार हवाई डाक ले जायी गयी थी। उस हवाई डाक पर लगाई गई मुहर की आकृति सबसे ऊपर के चित्र में।





टिकट संग्रह करना

डाक टिकट संग्रह करने के बारे में सबसे पहली कहानी एक युवती की है। उस युवती को इसका बड़ा शौक था कि वह अपने श्रृंगार कमरे की दीवारों को इस्तेमाल किये हुए टिकटों से ढक दे। उसने सोलह हजार टिकट तो स्वयं जमा कर लिये थे। 1841 में लंदन के 'टाइम्स' समाचार-पत्र में उसने विज्ञापन छपवाया जिसमें पाठकों से टिकट भेजने का अनुरोध किया गया था। इस तरह टिकट जमा करने की धुन तो आरंभ काल से ही रही। पहले तो बेतरतीब और बेहिसाब संग्रह किया जाने लगा। डाक-टिकट संग्रह करने को 'फिलातली' का सम्मानित नाम दिया गया। यह शब्द यूनानी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है—'फिलोस' (चाव) और 'अतेलेस' (कर से छूट)।

डाक टिकट संग्रह करने का शौक संसार भर में फैला हुआ है। अनेक व्यक्ति टिकटों को उनके मूल्य की दृष्टि से ही इकट्ठा नहीं करते, पर वे उन्हें आकलन (डिज़ाइन), कहानियों, किन्हीं घटनाओं की स्मृति और मुद्रण जानकारी के लिए भी जमा करते हैं। वास्तव में डाक टिकट किसी राष्ट्र की वे खिड़कियां हैं जिनके बाहर के लोग उसकी श्रेष्ठ परंपराओं और प्रकृति के दर्शन कर सकते हैं। राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू, व्यापार, इतिहास, कला, दस्तकारी और प्रकृति की झलक टिकटों के द्वारा मिल जाती है।

टिकट संग्रह अब केवल शौक ही नहीं रहा, यह तो विशेष अध्ययन का विषय बन गया है। कुछ लोग तो टिकटों का अध्ययन करते करते विभिन्न देशों के भूगोल, इतिहास



और प्राकृतिक जीवन का अध्ययन करने लगते हैं। अतः टिकटों का अल्बम ज्ञानकोश भी है और अनुसंधान पुस्तक भी।

क्या संग्रह करें?

क्या संग्रह करें और कैसे संग्रह करें? यह समस्या सभी नौसिखिये संग्रहियों के सामने आती है। सौ वर्ष पहले तो संसार-भर के सारे टिकट जमा कर लेना किसी टिकट



संग्रही के लिए आसान था। पर टिकट संग्रह की लोकप्रियता को देखकर विभिन्न देशों ने टिकटों को अपनी संस्कृति, उद्योग, प्राकृतिक दृश्य, भूगोल और अनेक उपलब्धियों के प्रचार का अच्छा माध्यम बना लिया।

अब शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिसका टिकटों पर चित्रण न हुआ हो। कुछ लोकप्रिय विषय हैं—हवाई-डाक, कला, पक्षी, तितली, संचार-व्यवस्था, मछली, विख्यात पुरुष और महिलाएं, फूल, औषधि, चित्र, डाक इतिहास, रेलवे, धर्म, स्काउटिंग, अंतरिक्ष, खेल, जहाज आदि।

संसार के समस्त देशों ने 3,00,000 से अधिक डाक टिकट अब तक जारी कर दिये हैं। प्रतिवर्ष 6-7 हजार नये टिकट जारी होते हैं। इसीलिए संसार के टिकटों का काफी हद तक पूरा संग्रह करना आज असंभव है।

इसीलिए संग्रही अब तो विशेष विषयों, खास देश अथवा किसी खास क्षेत्र के टिकटों का ही संग्रह करने लगे हैं। कुछ वर्षों से तो विषयवार संग्रह करना ही साधारण परिपाटी बन गयी है। इसका एक कारण यह भी है कि विषयवार संग्रह बहुत व्यक्तियों को अच्छे लगते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि के विषय के टिकट संग्रह करने के लिए मिल जाते हैं। किसी वर्ग के उपवर्ग भी हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, पक्षियों के टिकट संग्रह करने वाला उनका विभाजन इस प्रकार कर सकता है—भूमि के पक्षी, समुद्र के पक्षी, शिकारी पक्षी और खाने के लिए मारे जाने वाले पक्षी।

अतः टिकट संग्रह आरंभ करने से पहले यह निश्चित कर लेना उचित है कि क्या संग्रह किया जाये। जिस विषय को भी आप चुनें उसके टिकटों का संग्रह यथासंभव पूरा करना चाहिए। बेतुका या बेतरतीब संग्रह करना ठीक नहीं। टिकट संग्रह किसी ठीक ढंग से कीजिये। आरंभ ही यदि बेढंगेपन से हुआ तो टिकट संग्रह करने की रुचि भी जल्दी ही समाप्त हो जायेगी।

जो विषय आपको रुचिकर हो, उसे टिकट संग्रह के लिए चुन लीजिए। विषय चुनते समय इस बात का ध्यान रहे कि उस विषय के टिकट आपको आसानी से मिल सकते हैं क्या? आरंभ तो भारतीय स्वतंत्रता के बाद के टिकटों से करना अधिक अच्छा रहेगा।







कैसे संग्रह करें?

पहले टिकटों को जमा कर लीजिए। आपको बहुत टिकट मिल जायेंगे। अपने घर आने वाली चिट्ठियों तथा कार्यालय की डाक से टिकट इकट्ठे किये जा सकते हैं। लिफाफों से टिकटों को नोच कर निकालने की कोशिश न कीजिए। टिकट के चारों



ओर कुछ किनारा छोड़कर, उसे लिफाफे से काट लीजिए। टिकटों की दुकानों से भी पुराने टिकटों के पैकेट खरीद सकतें हैं। ये टिकट भी लिफाफों से ही लिये गये होते हैं। आपको स्कूल में ही अपने फालतू टिकटों की अदला-बदली करने वाले मिल जाएंगे।

इस तरह आपके पास अपनी रुचि के कुछ टिकट जमा हो गये। अब उन टिकटों को लगाएंगे कहां? अनेक तरह के अल्बम बाजार में मिलते हैं। वे अल्बम विषय-वार भी होते हैं। वे सस्ते भी होते हैं और महंगे भी। कुछ अल्बमों में टिकटों की पहचान के लिए चित्र भी छपे रहते हैं। आरंभ में ऐसा अल्बम नहीं खरीदना चाहिए जिम्के पृष्ठों के दोनों ओर टिकट लगाये जायें। इस तरह के अल्बम खरीदने पर खतरा यह रहता है कि उसके खोलते समय टिकट उखड़ते जाते हैं या खराब हो जाते हैं। अलग-अलग पत्रों वाला अल्बम खरीदना ठीक रहेगा। टिकटों की



सूची-पुस्तक भी खरीद लेना लाभदायक है, उससे टिकटों को अल्बम पर ठीक स्थान पर लगाने में सुविधा होगी। उस पुस्तक से टिकटों के विषय में अनेक प्रकार की जानकारी भी मिलेंगी, जैसे किसी विशेष तरह के टिकट कहां कहां और कब कब जारी हुए।

टिकटों का लगाना

अल्बम के पृष्ठों पर अपने टिकट लगाने से पहले आप चिप्पियों का पैकेट और चिमटी अवश्य खरीद लीजिए।

टिकटों को लगाने में गोंद, लेही या चिपकने टेप का प्रयोग कभी मत कीजिए। उनसे आपके टिकट सदैव के लिए खराब हो जायेंगे। टिकट लगाने के लिए चिप्पियों का पैकेट ले लीजिए। यह चौकोर और सपाट चिप्पियां पतले व मजबूत कागज की होती हैं। उन पर एक तरफ गोंद लगा रहता है। सूखने पर चिप्पी को आसानी से टिकट अथवा अल्बम के पृष्ठ से अलग किया जा सकता है। उससे टिकट को कोई हानि नहीं पहुंचती। अच्छी किस्म की चिप्पियां ही खरीदिए, क्योंकि वे महंगी नहीं होतीं। एक ओर गोंद लगी चिप्पियां बाजार में मिलती हैं। चिप्पी को ऐसे मोड़िए कि गोंद लगा भाग बाहर की ओर रहे। चिप्पी बिल्कुल बीच से न मोड़ी जायें। छोटा हिस्सा टिकट पर चिपकाया जाता है और बड़ा अल्बम के पृष्ठ पर।

टिकटों की उठा-धराई के लिए चिमटी का प्रयोग कीजिए, क्योंकि बार-बार

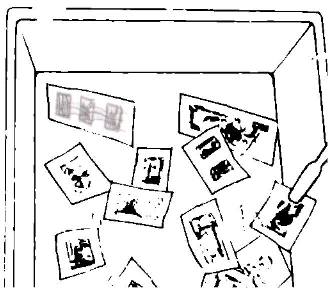


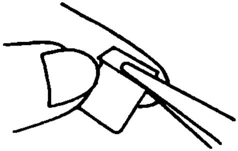


अंगुलियों से छूने से टिकट मैले हो जाते हैं और फट भी जाते हैं। चिमटी ऐसी हो जिसमें जंग न लग सके। पहले चिमटी से टिकट उठाने में कुछ कठिनाई मालूम होगी, पर अभ्यास पड़ जाने पर उसका प्रयोग आसान हो जायेगा।

टिकट, चिप्पी, अल्बम और चिमटी आपके पास हो गयी। अब पहला काम यह कीजिए कि काम में आये टिकटों को कागज से छुड़ाइए। उन पर लगी पुरानी गोंद भी साफ कर दीजिए। ऐसा करने से पहले अपने टिकटों को छांट लीजिए। ऐसे टिकटों को निकाल फेंकिए जो कहीं से फट गये हों, किनारे नुच गये हों, दनदाने कट गये हों, या जिन पर भारी मुहर लगी हो। इस प्रकार छांटने में आपको काफी टिकट फेंकने पड़ेंगे, पर दुख की कोई बात नहीं। खराब टिकटों को फेंकने में हिचकिचाइए मत, क्योंकि आपको तो अपना संग्रह अच्छे से अच्छा बनाना है।

अब अच्छे टिकटों को ठंडे पानी से भरे साफ ट्रे या थाल में डालकर उन्हें भिगो दीजिए और आसानी से कागज से अलग कर लीजिए। एक साथ सारे टिकट पानी में न डालिए। एक बार में एक-दो मुट्ठी डालना काफी होगा। कुछ समय तक उन्हें भींगने दीजिए, जिससे वे कागज से अलग होने लगें। भींगते हुए टिकटों को जरा ध्यान से देखिए। कुछ टिकटों की स्याही (रंग) पानी में डालने पर फैल जाती है। यदि कोई ऐसा टिकट दिखे तो उसे तुरंत पानी से निकाल लीजिए, नहीं तो बरतन में पड़े सारे टिकट खराब हो जायेंगे। जिन टिकटों की स्याही पक्की न हो, उनको अलग बर्तन में सावधानी से भिगोना चाहिए। भीगे टिकटों को चिमटी से ही निकालकर साफ कागज पर सुखा दीजिए। टिकट का मुँह नीचे की तरफ हो। टिकट सूखने पर कुछ मुड़ जाते हैं।

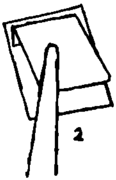




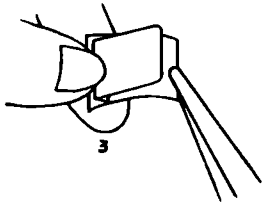
1. चिप्पी मोड़ने का तरीका

उन्हें सीधा करके किसी पुस्तक में दबा दीजिए। कुछ समय बाद वे सपाट हो जायेंगे।

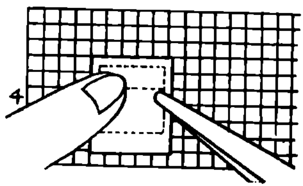
भिगोने, सुखाने और सपाट करने के बाद अब आपके टिकट अल्बम में लगाने योग्य हो गये। अब टिकटों को छांट लीजिए। जिस प्रकार अल्बम में टिकटों को लगाना हो उस तरह उन्हें रख लीजिए।



2. मुड़ी चिप्पी को टिकट की पीठ पर लगाने का तरीका



चिप्पी के एक तिहाई अथवा एक चौथाई भाग को मोड़िए। छोटे भाग को टिकट के पिछले भाग पर दनदानों से नीचे लगा दीजिए। चिपकाते समय चिप्पियों को अधिक गीला न कीजिए। कोरे टिकटों पर चिप्पी लगाते समय तो खास ध्यान



3-4. चिप्पी लगे टिकट को अल्बम के पृष्ठ पर लगाने का तरीका

रखना चाहिए, क्योंकि अधिक नमी टिकट की गोंद पर असर डालती है। चिप्पी को टिकट पर लगाने के बाद उसके दूसरे छोर को नम करके टिकट को पृष्ठ के नियत स्थान पर लगा दीजिए। पृष्ठ पर जहां टिकट रखा हो वहीं उसे अंगुली से हल्का दबा दीजिए। अब विभिन्न आकारों वाले विविध टिकटों को रंगीन पृष्ठ और उसके ऊपर के पारदर्शी पृष्ठ के बीच में माऊंट में लगा दें। चिप्पियों के स्थान पर माउंट का उपयोग टिकटों को नष्ट अथवा खराब होने से बचावेगा।

टिकटों की सजावट

डाक टिकट संग्रह करने में सबसे अधिक संतोष उनके प्रदर्शन से होता है। जिला,



क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर टिकट प्रदर्शनियों का नियमित आयोजन होता रहता है। एक बार जब आप टिकट संग्रह करना शुरू कर देते हैं तब आपका उद्देश्य अपने संग्रह को प्रदर्शनियों में प्रदर्शन और मूल्यांकन के उपयुक्त बनाना होता है।



2500th BUDDHA JAYANTI





COLOUR TRIALS



PHOTOPROOFS





FINISHED STAMPS



THE ROUND FIGURE ON THE LEFT IS A REPLICA OF THE UMBRELLA WHICH ONCE SURMOUNTED A COLOSSAL BODHISATTVA STATUE AT SARNATH CARVED IN THE REIGN OF THE KUSHAN KING KANISHKA (FIRST-SECOND CENTURY A.D.) THE UMBRELLA IS 10 FT. IN DIAMETER AND IS ADORNED WITH CONCENTRIC DECORATIVE BANDS. THE PIERCED PROJECTING PORTION AT THE CENTRE HAS THE SHAPE OF A LOTUS. THE BAND AROUND THE LOTUS-PETALS CONTAINS A ROW OF TWELVE MYTHICAL ANIMALS. THE NEXT BAND HAS ELEVEN SYMBOLS BESIDES ONE BROKEN, VIZ. THE THREE JEWELS, A PAIR OF FISH, [illegible] A *FLEUR DE LIS*, A VASE WITH FOLIAGE, A CONCH, A SAASTIKA, A VASE WITH FRUITS (OR SWEETS), A CUP OF LEAVES & THREE HONEYSUCKLES. THE OUTERMOST BAND IS MADE OF LOTUS-PETALS BORDERING THE UMBRELLA. ON THE RIGHT IS SHOWN A REPRESENTATION OF THE BODHI TREE.



ARTIST'S REPRESENTATION OF THE ASVATTHA TREE (FICUS RELIGIOSA) AT BODH GAYA SEATED UNDER WHICH GAUTAMA ATTAINED ENLIGHTENMENT. IN BUDDHIST ART THIS TREE SYMBOLIZES THE SUPREME MOMENT IN GAUTAMA'S LIFE WHEN HE BECAME THE BUDDHA.





भारत INDIA
INTERNATIONAL UNION CONSERVATION OF NATURE AND NATURAL RESOURCES
20P
भारत INDIA
हमारी सेनाओं को बधाई
GREETINGS TO OUR FORCES
INTERNATIONAL UNION OF RAILWAYS 1922-1972
UNESCO·25TH ANNIVERSARY
20R
यूनेस्को · 25वीं जयन्ती
UNESCO
भारत INDIA
INDIA NATIONAL PHILATELIC EXHIBITION
20R
1970
1Re
भारत INDIA


BLUE MAGPIE
20
CRICKET VICTORIES
ABHISARIKA BY
भारत INDIA
100 000
POST OFFICES
भारत
INDIA
INDIA
1947
1972
20
भारत INDIA
20
P.
COCHIN SYNAGOGUE
1568-1968
20
25th ANNIVERSARY OF INDEPENDENCE
CENSUS CENTENARY

इसके लिए आपको अपने चुने हुए विषय से संबंधित व्यापारिक लिफाफों पर इस्तेमाल की गई टिकटों को जुटाना चाहिए। परंपरागत संग्रहों के साथ ही आपको अलग-अलग देशों से लाई गई सामग्री से भी इन्हें इकट्ठा करना चाहिए। इसके लिए स्टेनले गिब्सन स्काट्स आदि के सदृश्य एक मानक सूचीपत्र देखना उचित होगा। अल्बम में टिकट लगाने के पहले डाक टिकट सामग्री को अपनी स्टाक बुक में रखें।

टिकटों और अन्य डाक सामग्री का संग्रह करने के बाद आप पुस्तक की विषय-सूची की तरह आप अपने चुने हुए विषय को अच्छे ढंग से प्रस्तुत करें। योजना को प्रभावी करने के लिए कार्य की संरचना और उसके उप-विभागों को ठीक से परिभाषित करें। यह विषय से संबंधित और पूरी तरह तर्कसंगत, ठीक-ठाक और संतुलित होना चाहिए। जितना विषय पर अधिक खोज की जायेगी उतने ही अच्छे ढंग से मौलिक सामग्री प्रस्तुत हो सकेगी। इसलिए आप कथानक का विकास करते समय पूरी सावधानीपूर्वक विचार करके अध्याय एवं उप-अध्यायों के शीर्षक तैयार करें।

अंतिम सजावट हल्की लाइनों और चौखानेदार कागज वाले सफेद और मोटे कागज वाले अल्बम पर की जानी चाहिए।

प्रदर्शन के बारे में जो भी लिखा जावे वह संक्षिप्त, पठनीय, त्रुटिरहित और स्पष्ट अथवा टाइप किया होना चाहिए।

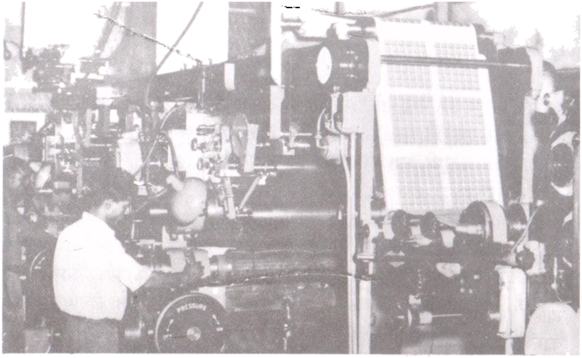
सजावट में विचारों के लेखन के लिए उपयुक्त स्थान होना चाहिए ताकि लेखन और प्रदर्शन में संतुलन कायम रहे। ऐसा ही टिकटों और अन्य दस्तावेजों को कागज पर माउंट करते समय किया जाये। लेखन के साथ टिकट इस तरह लगाए जावें कि पृष्ठ न तो खाली और न ही अधिक भरा हुआ दिखे। योजना के मुताबिक उप-शीर्षक देने के लिए पृष्ठ के शीर्ष पर स्थान की व्यवस्था करनी चाहिए। याद रखें आपके संग्रह में न केवल टिकटें हैं बल्कि उसमें अन्य डाकीय वस्तुएं, यथा; व्यापारिक लिफाफे, कार्ड और निरास्तियां आदि भी हैं।

सामग्री का अच्छी हालत में होना बहुत जरूरी है। श्रेष्ठ मुद्रित टिकटों को वरीयता दें और क्षतिग्रस्त टिकटें प्रदर्शित न करें। आप उपयोग की जा चुकी टिकटों को तभी

शामिल करें जबकि नयी टिकटें सरलता से उपलब्ध न हों। नई और उपयोग हो चुकी टिकटों को एक ही पृष्ठ पर जहां तक संभव हो एक साथ न लगावें।

एक साफ सुथरे, सुव्यवस्थित एवं ढंग से सज्जित संग्रह हमेशा प्रशंसनीय होता है।





टिकटों का मुद्रण

टिकटों के मुद्रण के बारे में टिकट संग्रहियों की जिज्ञासा स्वाभाविक है। टिकटों के कैटलाग में छपाई के बारे में जानकारी दी गयी होती है जैसे—टाइपोग्राफी, आफसैट, लिथोग्राफी, इनटैलियो अथवा फोटोग्राव्यु। पर मुद्रण के ये ढंग हैं क्या? इन सबकी तकनीक तो बड़ी पेचीदा हैं, पर सामान्य सिद्धांत की बातें सरल हैं।

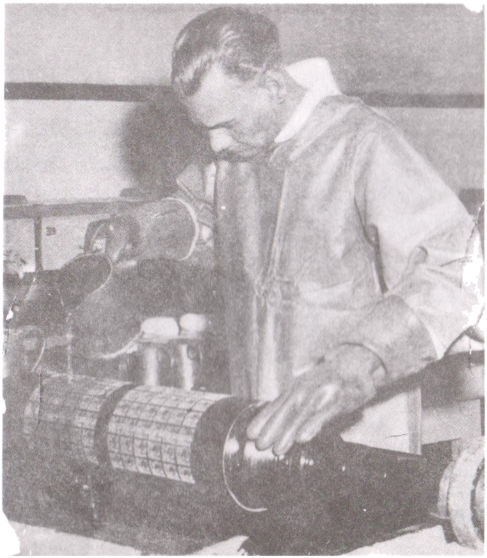
जिन खास चार मुद्रण प्रणालियों से टिकट छापे जाते हैं वे इस प्रकार हैं—

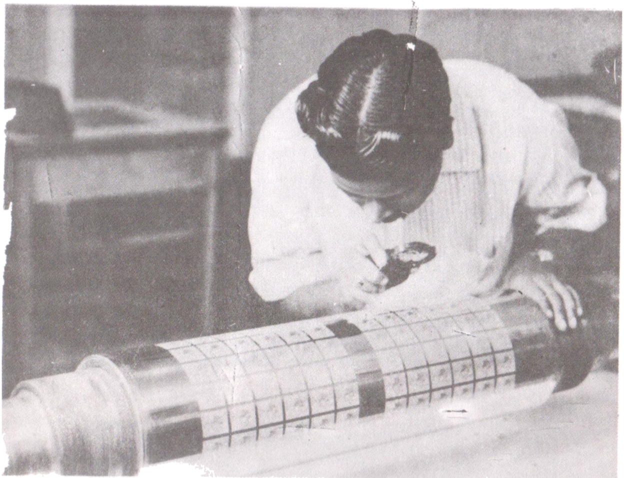
टाइपोग्राफी

आपने देखा होगा कि लोग अपने नाम और पतों को छापने के लिए रबड़ की मुहरों का प्रयोग करते हैं। रबड़ की मुहरों की छाप कागज पर कैसे आती है? रबड़ की मुहर पर स्याही लगाकर जब उसे कागज पर दबाते हैं तो नाम छप जाता है। यही सिद्धांत टाइपोग्राफी या लैटर प्रैस मुद्रण में लागू होता है। मुद्रित होने वाला डिजाइन उभरा हुआ होता है। वही स्याही पकड़ लेता है। स्याही लगा भाग जब कागज पर लगता है तब उस पर छप जाता है।

लिथोग्राफी

सफेद कागज पर अपना नाम स्याही से लिखिए और उस पर सफेद और नरम कागज लगा दीजिए। ऐसा करने से उस कागज पर आपका नाम उल्टे रूप में उतर आयेगा। उसके तुरंत बाद ही अगर उस नरम कागज पर अन्य कागज रखकर उसे दबा दें तो आपका उल्टा नाम तीसरे कागज पर पहले की तरह सीधा आ जायेगा। आफसैट लिथोग्राफी का सिद्धांत भी यही है। जस्ते या एल्यूमिनियम की प्लेटों पर फोटोग्राफी की प्रक्रिया से डिजाइन बनाये जाते हैं। उन प्लेटों से कागज पर सीधी छपाई नहीं होती। स्याही लगी तैयार प्लेट से पहले रबड़ के सिलेंडर पर छाप आती है और बाद में सिलेंडर कागज पर छपाई सीधी करता है।





एनग्रेविंग

नरम लकड़ी का ऐसा टुकड़ा लें जिसकी सतह हमवार और चिकनी हो। चाकू से उस पर अपना नाम उल्टा गोद दें। गुदे अक्षरों में छापे की स्याही भर दें। किसी कपड़े से लकड़ी की सतह साफ कर दें। अब उस लकड़ी के टुकड़े को सोख्ते (ब्लाटिंग पेपर) पर दबा दें। इस प्रकार आपका नाम उभार (रिलीफ) में छप जायेगा। यही छापे का इनटैलियो सिद्धांत है। इसमें कुशल कारीगर उल्टे में डिजाइन उत्कीर्ण करते हैं, गोदते हैं। उत्कीर्ण भाग में स्याही भर जाती है और कागज पर डिजाइन की उभरी छाप आ जाती है।

फोटोग्राव्यु

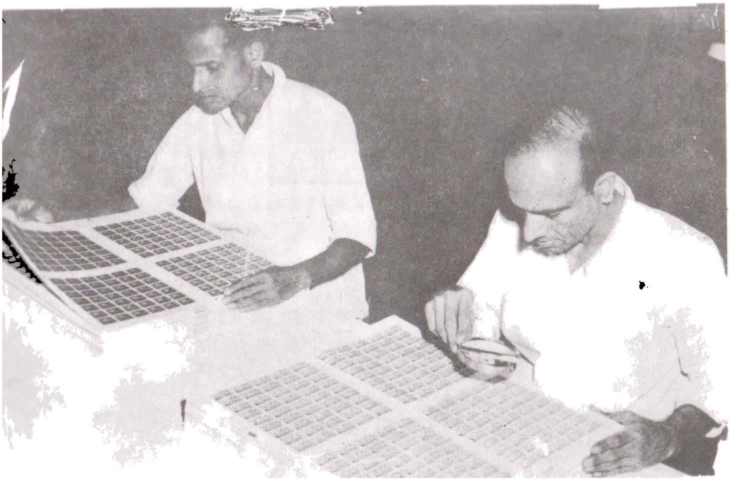
फोटोग्राव्यु और इनटैलियो प्रणाली बहुत कुछ समान ही हैं। उनमें केवल एक अंतर है। फोटोग्राव्यु में महीन जाली (स्क्रीन) के माध्यम से डिजाइन की फोटो ली जाती है।

इस प्रकार उस डिजाइन की फोटो छोटे छोटे बिंदुओं के रूप में टूट जाती है। फिर यंत्रों और रसायनों की मदद से वे छोटे छोटे बिंदु तांबे की प्लेट पर गुद जाते हैं। उन बिंदुओं के छेदों में स्याही भर जाती है। बाद में कागज के सम्पर्क में आने पर डिजाइन उस पर छप जाता है। 1952 से भारतीय डाक टिकट फोटोग्राव्यु प्रणाली से ही छापे जा रहे हैं।

मुद्रण की प्रत्येक प्रणाली की अपनी अच्छाई और उपयोगिता है।

टिकटों की छपाई के लिए लैटर प्रैस प्रणाली अब भी काम में आती है, पर विशेषकर मुद्रण के ऊपर फिर मुद्रण करने के लिए ही।

अनेक रंगों वाले डिजाइन की छपाई के लिए आफसैट लिथोग्राफी प्रणाली ही श्रेष्ठ और सस्ती है। पर विशेष बढ़िया ढंग की छपाई के लिए यह प्रणाली काम में नहीं आती।



डिजाइनों की महीन रेखाओं को अधिक साफ छापने की समस्या जब तक नहीं आती, तब तक फोटोग्राव्यु प्रणाली से ही डाक टिकटों की बहुत अच्छी छपाई हो जाती है।

और भी अच्छे टिकट छापने के लिए व्यापारी मुद्रकों ने ऐसी प्रणाली का भी विकास किया है जिसमें गुदाई, फोटोग्राव्यु और लिथोग्राफी सब मिली-जुली हैं।





गलतियां और खराबियां

डाक टिकटों की छपाई इतनी पेचीदा ढंग से होती है कि मुद्रण की गलतियां अक्सर हो जाती हैं। मुद्रण के बाद टिकटों को पूरी तरह परीक्षा के पश्चात ही बिक्री के लिए डाकखानों को भेजा जाता है। फिर भी जांच के समय कुछ गलतियां आंख से ओझल हो ही जाती हैं। और चीजों के संग्रही तो किसी प्रकार से खराब वस्तु को खरीदते ही नहीं, पर टिकट संग्रही खराबी या गलती वाले टिकटों की खोज में रहते हैं।

टिकटों के उत्पादन के समय अनेक प्रकार की गलतियां हो जाती हैं। कुछ सामान्य गलतियां निम्न प्रकार की हैं:

नवरूप

कभी ऐसा होता है कि प्लेट पर बनाया गया डिजाइन और डिजाइनों से जब मेल नहीं खाता तब उसे नष्ट कर देते हैं और उसकी जगह दूसरा बनाते हैं। अगर मूल

डिजाइन पूरी तरह साफ नहीं हो पाता तो उसकी कुछ लकीरें भविष्य में छपने वाले टिकटों पर आ जाती हैं। इस प्रकार की गलती वाले टिकट 'नवरूप' (फ्रेश एंट्री) कहलाते हैं।

शोधित

अक्सर ऐसा होता है कि लिथोग्राफी प्रणाली से कुछ छपाई के बाद स्टोन अथवा प्लेट का डिजाइन घिस जाता है। इसका पता लगने पर घिसे हिस्से का शोधन (रिटच) कर देते हैं। कभी कभी सुधारा हुआ भाग स्पष्ट झलकने लगता है। ऐसी खराबी वाले टिकटों को 'शोधित' (रिटचेज) कहते हैं।

तेत बेश

प्लेट तैयार करते हुए अथवा स्टोन पर डिजाइन जमाते समय कभी कभी डिजाइन एक दूसरे से उल्टे हो जाते हैं। जब टिकटों को शीट से अलग-अलग कर लिया जाता है तब तो उनकी छपाई में गलती नहीं दिखती पर जब वे जुड़े रहते हैं तब इस प्रकार की गलती का पता चलता है। डिजाइन के इस उलट-फेर को 'तेत बेश' कहते हैं।

दुहरा

'दुहरा' के स्वरूप अनेक होते हैं। छापते समय अगर कोई कागज दोबारा मशीन में चला जाय तो उस पर दुहरी छपाई हो जायेगी। छपे दोनों डिजाइनों में जितनी अधिक दूरी होगी गलती का महत्व उतना ही अधिक बढ़ जायेगा।



कभी-कभी गलती से कागज के दोनों तरफ छपाई हो जाती है। टिकटों पर इस प्रकार की गलती का बहुत महत्व होता है।

टिकट को जब एक से अधिक रंगों में छापा जाता है तब जितने रंग होते हैं उतनी ही बार उसका मुद्रण करना पड़ता

है। प्रत्येक रंग को छापते समय बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है, जिससे प्रत्येक रंग ठीक स्थान पर छपे। नाप की जरा सी भूल के कारण छपे गलत टिकट संग्रहियों के लिए बड़े कीमती हो जाते हैं।



किस

छपाई के समय असावधानी से कभी छपा शीट दुबारा किसी तरफ से प्लेट को छू जाता है और इस असावधानी के फलस्वरूप कुछ टिकटों पर दुहरी छाप लग जाती है। यह छपाई की गलती नहीं। इस प्रकार की गलती को फिलातली की भाषा में 'किस' (चुंबन) कहते हैं।

रंग का गायब हो जाना

दूसरे या तीसरे रंग को छापते समय कभी कभी मशीन में कागज की दो शीटें साथ-साथ चली जाती हैं। ऐसी हालत में नीचे के कागज पर कोई एक रंग नहीं आता। वह गुम हो जाता है। टिकट संग्रही ऐसे टिकटों की बड़ी खोज में रहते हैं।

विलोम

अक्सर ऐसा होता है कि टिकट का चौखटा तो किसी रंग में छापा जाता है और बीच का भाग दूसरे रंग में। चौखटे की छपाई के बाद अगर कागज का उलटा छोर मशीन में डाला गया तो बीच के डिजाइन की छपाई चौखटे के हिसाब से विलोम (उल्टी) हो जायेगी।

रंग में भेद

स्याही की मिलावट में उलट-फेर होने के कारण कभी-कभी एक ही रंग की आभा और रंग के मेल में काफी फर्क दीखता है। पुराने टिकटों में इस प्रकार की गलती अक्सर हो जाती थी।

दोषिक

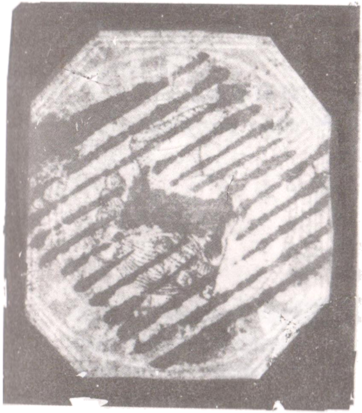
मुद्रण करते समय जब कागज मुड़ जाता है या उनमें लकीर पड़ जाती है, तब छपे टिकटों पर सफेद दरार-सी आ जाती है। कभी-कभी डिजाइन का कोई भाग ही टिकट पर नहीं उभरता। ऐसे टिकटों को विचित्र (फ्रीक) अथवा दोषिक (फ़्लाज) कहते हैं।

अनेक प्रकार की गलती वाले टिकटों के समावेश से टिकट संग्रह अधिक मनोरंजक हो जाता है। इसलिए टिकट संग्रही को गलती देखने में बड़ा सजग होना चाहिए। गलती वाले टिकटों को प्राप्त करने की कोशिश भी जरूरी है। गलती वाले टिकट संग्रह को मनोरंजक बनाने के अतिरिक्त उसे मूल्यवान भी बना देते हैं। संसार भर के टिकट संग्रही इस प्रकार के टिकटों की खोज में रहते हैं। ऐसे टिकटों की जब बिक्री होती है तब उनके दाम भी खूब चढ़ जाते हैं।

जिन गलतियों का ऊपर जिक्र किया गया है उनमें अधिकांश मुद्रण के कारण होने वाली हैं। अतः टिकट संग्रही को चाहिए कि अपने टिकटों में छपाई की गलती वाले टिकटों की अच्छी तरह छान-बीन करे। इस प्रकार की कुछ गलतियां तो ऐतिहासिक हो गयी हैं। 'विलोम' टिकटों के तीन उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि टिकटों की पूरी छानबीन करने की योग्यता प्राप्त करना टिकट संग्रही के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

विशेष महत्व के भारतीय टिकटों में चार आने वाला 'विलोम सिर' वाला टिकट है। 1854 में सर्वेयर जनरल के कार्यालय से जो प्रथम भारतीय टिकट जारी हुए थे उनमें यह चार आने वाला टिकट भी था। यह टिकट लिथोग्राफिक प्रणाली से छापा गया था। उस टिकट-माला में दो रंग छपने वाला टिकट केवल चार आने वाला था। उस माला के अन्य सब टिकट एक रंग के ही थे। चार आने वाला टिकट का चौखटा और

सिर अलग-अलग छापे गये थे। छापते समय चौखटे को देखते हुए सिर उल्टा (विलोम) छप गया। 1874 तक इस गलती का पता ही नहीं लगा। उस चार आने वाले



'विलोम सिर' टिकट की लगभग 28 असली प्रतियां मिलती हैं। इस टिकट की प्रत्येक प्रति आजकल 10,000 पौंड से 35,000 पौंड (2,30,000 रु. से 8,05,000 रु.) से भी अधिक मूल्य की है।

इसी तरह की गलती अमरीकी टिकटों में (1869) हो गयी। 1, 2, 3, 6, 10, 12, 15, 24, 30 और 90 सेंट के दस टिकट वहां जारी हुए थे। छोटी कीमत के टिकट एक रंग के थे। बड़ी कीमत के चार टिकट दो रंगों में छापे गये थे। उन टिकटों को बेचते समय एक सरकारी एजेंट ने देखा कि 15 सेंट की पूरी शीट का हर टिकट बीच में विलोम (उल्टा) छप गया है। यह कोलंबस के आगमन वाले दृश्य का टिकट था। इसी प्रकार की गलती बाद में 24 सेंट और 30 सेंट वाले टिकटों में भी हो गयी। उन 'विलोम' टिकटों की लगभग 8 कोरी प्रतियां बची हैं। उन टिकटों में 15 सेंटवाला टिकट सबसे अधिक अलभ्य है। उसकी कीमत 16,000 पौंड (3,68,000 रु.) आंकी जाती है। उसके बाद दूसरे नंबर का टिकट 30 सेंट वाला है। उसका मूल्य है 7,500 पौंड (1,72,000 रु.)। 24 सेंटवाला विलोम (उल्टा) टिकट 6,500 पौंड (1,49,500 रु.) का है।

जो युवक संग्रही टिकटों की ध्यान से परीक्षा नहीं करता ऐसे मूल्यवान टिकट

उसकी निगाह से निकल जाते हैं। उसे डबल्यू.टी. रोबे की तरह टिकटों को ध्यान से देखने वाला होना चाहिए। उन्होंने ही पहली बार अमरीका के 24 सेंटवाले हवाई डाक



24 सेंट का हवाई
'विलोम' (उल्टा) टिकट

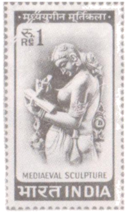
विलोम टिकट का पता लगाया था। अमरीकी डाक विभाग ने 24 सेंटवाला नया टिकट 13 मई, 1918 को जारी किया। उस दुरंगे टिकट के डिजाइन में हवाई जहाज दिखाया गया था। एक सप्ताह बाद वाशिंगटन के उत्साही फिलातलिया डबल्यू. टी. रोबे ने पास के डाकघर से इस टिकट की पूरी शीट (ताव) खरीदी। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि हवाई जहाज उल्टा छपा था। उसकी वह शीट दुर्लभ हो गयी। एक सप्ताह के बाद रोबे ने उस शीट को 15,000 डालर (1,95,000 रु.) में बेच दिया। उसके बाद यह शीट 20,000 डालर (2,60,000 रु.) में कर्नल ग्रीन ने खरीदी। कर्नल ग्रीन ने उस शीट को टुकड़े-टुकड़े करके बेचा। 1940 में उस शीट के एक टिकट की कीमत 4,100 डालर (53,300 रु.) थी।

अब तुमको इस बात का पता चल गया होगा कि टिकट संग्रह करना कितना उत्साहपूर्ण शौक है। वह अनायास ही लाभदायक भी सिद्ध हो सकता है। क्या पता, आपके संग्रह का कोई टिकट कभी अमूल्य ही निकल आये? सबसे अधिक महत्व की

बात तो यह है कि टिकट संग्रह से अनेक देशों के बारे में बहुत सी बातों का आपको पता लगता है। यह शौक, आनन्ददायक खिलवाड़ होने के साथ-साथ अनेक विषयों के बारे में उपयोगी जानकारी देने वाला भी है। टिकट संग्रह के लिए उसका अल्बम लघु ज्ञानकोष सिद्ध हो सकता है।




पै.
P. 50
भारत INDIA


मध्ययुगीन मूर्तिकला
रू. Re 1
MEDIAEVAL SCULPTURE
भारत INDIA


भारत
INDIA
1 रु.
Re.


पै. 3 P.
BRASSWARE
पीतल पात्र
भारत INDIA


INDIA POSTAGE
15
nP
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानु
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श॥
INDIA SECURITY PRESS


30 P.
पै.
HANDICRAFTS
हस्त शिल्प
भारत INDIA


रू.
Rs. 2
भारत INDIA


भारत INDIA
20
पै. P.
1871-1951
ABHISARIKA BY
ABANINDRANATH TAGORE

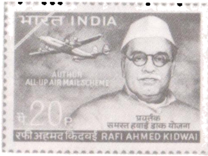

राधा-किशनगढ़ RADHA-KISHANGARH
पै.
P. 20
भारत INDIA


गांधी शताब्दी
GANDHI CENTENARY
1869-1969
पै. P.
75
भारत INDIA


भारत
INDIA
राजा रवि वर्मा
RAJA RAVI VARMA
1848
1906
P.
पै. 20

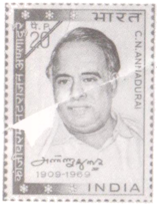

0.15
1870-1925
चित्तरंजन दास
CHITTARANJAN DAS
भारत INDIA
INDIA SECURITY PRESS


1889
1956
आचार्य नरेन्द्र देव
पै. P.
20
भारत INDIA
ACHARYA NARENDRA DEO

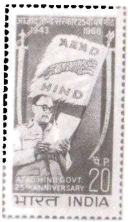

भारत INDIA
AUTHOR
ALL-UP AIR MAIL SCHEME
पै. 20 P
प्रवर्तक
समस्त हवाई डाक योजना
रफी अहमद किदवई RAFI AHMED KIDWAI

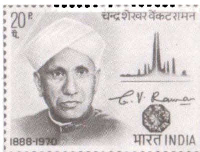

1847-1933
ANNIE BESANT
न.पै.
15 nP
INDIA भारत
INDIA SECURITY PRESS


विश्वभारती स्वर्ण जयन्ती
20
पै. P.
भारत INDIA
VISVA-BHARATI GOLDEN JUBILEE


भारत
पै. P.
20
C.N. ANNADURAI
1909-1969
INDIA

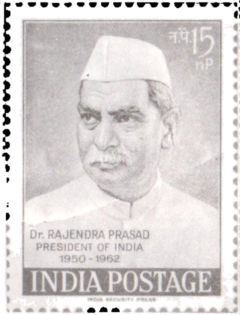

GHALIB ग़ालिब
INDIA
1797-1869
20
पै. P.
भारत


आज़ाद हिन्द सरकार 25वीं वर्षगांठ
1943
1968
AZAD
HIND
पै. P.
AZAD HIND GOVT.
25TH ANNIVERSARY
20
भारत INDIA


20 P
पै.
चन्द्रशेखर वेंकटरामन
C. V. Raman
1888-1970
भारत INDIA


दादासाहब फाळके
DADASAHEB PHALKE
1870-1944
भारत
INDIA
पै. P.
20

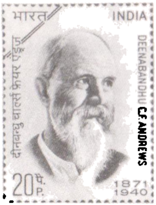

भारत INDIA
0.15
1889-1964

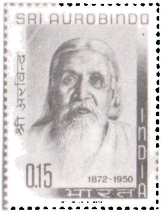

न.पै. 15 nP
Dr. RAJENDRA PRASAD
PRESIDENT OF INDIA
1950-1962
INDIA POSTAGE


DR. RADHAKRISHNAN
15 पै. P.
भारत INDIA
PRESIDENT OF INDIA 1962-1967


LALBAHADUR SHASTRI
1904-1966
लालबहादुर शास्त्री
0.15 भारत INDIA


भारत INDIA
PRESIDENT OF INDIA 1967-1969
1897-1969
पै. P.
20
डॉ. जाकिर हुसैन DR. ZAKIR HUSAIN


भारत
INDIA
DEENABANDHU C.F. ANDREWS
20 पै. P.
1871
1940


SRI AUROBINDO
श्री अरविन्द
INDIA
0.15
1872-1950
भारत


भारत INDIA
15 पै. P.
ATOMIC ENERGY & RESEARCH
HOMI BHABHA
1909-1966


1867-1911
SISTER NIVEDITA
20
भारत पै. P. INDIA


20 पै. P.
1869-1969
भारत INDIA
बा-बापू BA-BAPU
गांधी शताब्दी GANDHI CENTENARY


20
भारत INDIA
1907-1931


भारत
0.15
INDIA
1809
अब्राहम लिंकन
1865
M LINCOLN


भारत INDIA
पै. 20 P.
1867-1934
MARIE CURIE


INDIA
मैक्सिम गोर्की
1868 - 1936
पै.
15
P.
MAXIM GORKY

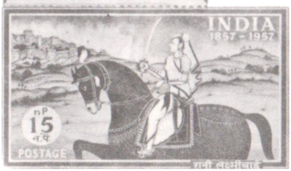

INDIA
ELEANOR
ROOSEVELT
न.पै.
15
nP
UNIVERSAL DECLARATION OF HUMAN RIGHTS
15th ANNIVERSARY - 10th DECEMBER 1963


भारत
INDIA
DR. MARTIN LUTHER KING
1929-1968
पै.
P.
20


महर्षि वाल्मीकि MAHARSI VALMIKI
पै. P.
भारत 20 INDIA

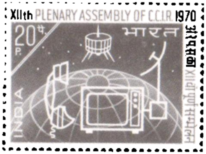

भारत
INDIA
20
पै. P.
बेट्होवन्
1770-1827
BEETHOVEN


भारत INDIA
INTERNATIONAL EDUCATION YEAR
पै.20P.
1870-1952
DR. MONTESSORI CENTENARY


INDIA
1857 - 1957
nP
15
न.पै.
POSTAGE

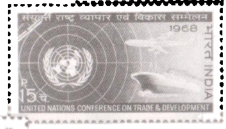

भारत INDIA
न.पै.
15
nP
Dr. W. M. HAFFKINE
1860 - 1930


संयुक्त राष्ट्र
25 वीं जयंती
UN
XXV
ANNIVERSARY
भारत पै. 20 P. INDIA


XIIth PLENARY ASSEMBLY OF C.C.I.R. 1970
20 पै. P.
भारत
INDIA


भारत INDIA
20 पै.
P. 20
21वीं अन्तर्राष्ट्रीय
भौगोलिक कांग्रेस
1968


57वां अन्तर्संसदीय सम्मेलन
भारत
INDIA
नई दिल्ली
NEW DELHI
1969
पै. 20
P. 20
57th INTER-PARLIAMENTARY CONFERENCE


संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन
1968
भारत INDIA
P. 15 पै.
UNITED NATIONS CONFERENCE ON TRADE & DEVELOPMENT


1 रु. Re
India National Philatelic
Exhibition
1970
INDIA भारत
भारत की राष्ट्रीय डाक-टिकट प्रदर्शनी


भारत
INDIA
20
पै. P
31-10-1971
विश्व मितव्ययिता दिवस WORLD THRIFT DAY

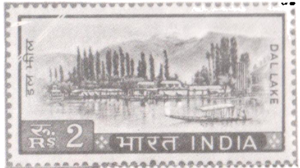

INTERNATIONAL LABOUR ORGANISATION
1919-1969
20
पै.
WORKERS
EMPLOYERS
ILO
GOVERNMENTS
भारत INDIA
अन्तर्राष्ट्रीय श्रम
संगठन


अहर्निशं सेवामहे
एक लाख
डाकघर
100 000
POST OFFICES
20 पै. P.
भारत
INDIA


पै. P.
20
भारत INDIA
IMCO
10TH
ANNIVERSARY
1959-1969
अंतर्शासन समुद्री
परामर्श संगठन की दसवीं जयंती


प्रथम त्रैवार्षिक कला-प्रदर्शनी, नई दिल्ली
FIRST TRIENNALE-NEW DELHI
1968
पै.
15
P.
भारत INDIA


20
P
INS NILGIRI
भारत INDIA

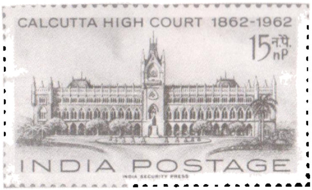

डल झील
DAL LAKE
रु.
Rs 2
भारत INDIA


हम्पी रथ
पै.
70 P
HAMPI CHARIOT
भारत INDIA


भारत
20 पै. P.
INDIA
PORT COMMISSIONERS
CALCUTTA
पोर्ट कमिश्नर्स कलकत्ता · 1870 · 1970


विशाखापत्तनम
VISAKHAPATNAM
0.15
JALAUSHA
भारत INDIA


TROMBAY
ATOMIC REACTOR
रु.
Rs 10
भारत INDIA


CALCUTTA HIGH COURT 1862-1962
15 न.पै.
nP
INDIA POSTAGE
INDIA SECURITY PRESS


INTERNATIONAL TOURIST YEAR 1967
भारत
INDIA
अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष 1967 पै.15 P.


भारत INDIA
20
पै. P
कोचीन सिनागोग
COCHIN SYNAGOGUE
1568-1968


भारत INDIA
GURU GOBIND SINGH


BHAKRA DAM
भाखड़ा बाँध
भारत INDIA
रु.
Rs 5


आम चुनाव
GENERAL ELECTION
1967
पै. 15 P.
INDIA
भारत


JAI JAWAN
0.15
भारत INDIA


जय किसान
JAI KISAN
पै. 15 P.
भारत INDIA


5 P.
FAMILY PLANNING
परिवार नियोजन
भारत INDIA


भारतीय जीवन बीमा
1870-1970
20
भारत
INDIA


50TH ANNIVERSARY
INDIAN RED CROSS SOCIETY
20 पै. P.
भारत INDIA
इण्डियन रेड क्रास सोसाइटी अर्द्धशताब्दी 1970


परिवार नियोजन कीजिये
पै. 15 P.
PLAN YOUR FAMILY: FAMILY PLANNING WEEK 1966
भारत INDIA

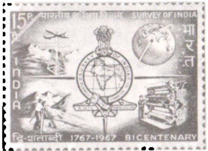

20
ASIAN PRODUCTIVITY YEAR-1970
भारत INDIA


THEY DEFEND
1
Rs
भारत INDIA


INDIA
भारत
1971
20 P.
CRICKET VICTORIES


DIAMOND JUBILEE
SCOUT MOVEMENT
1967
15 P
भारत INDIA


भारत INDIA
1919-1969
20 पै. P.
JALLIANWALA BAGH - 50th ANNIVERSARY


15 P.
SURVEY OF INDIA
INDIA
भारत
1767-1967 BICENTENARY


15 P.
भारत INDIA
HOCKEY CHAMPIONS
5th ASIAN GAMES 1966


NEHRU AND NAGALAND
15 P.
भारत INDIA


WORLD WRESTLING CHAMPIONSHIPS
15 पै.
INDIA
भारत 1967


INDIA
ARVI SATELLITE EARTH STATION
पै. P.
20


भारत
INDIA
20 P.
CHARTER OF CYRUS THE GREAT
2500th ANNIVERSARY


INTERNATIONAL CO-OPERATION YEAR 1965
भारत INDIA
0.15


50 P.
पै.
MANGOES
भारत INDIA


1942 QUIT INDIA
15 P.
INDIA


XIX OLYMPICS
Re 1
1968
भारत INDIA


«ВОСТОК-5»
В.Ф. БЫКОВСКИЙ
25
DDR
XVIII OLYMPISCHE SPIELE TOKIO 1964
REPUBLICA PORTUGUESA
MOCAMBIQUE
GUINÉE
RÉPUBLIQUE DE
40F
POSTES
DE MAURITANIE
40F
1863 - 1963
MAGYAR POSTA
4D
FLOTA MAMBISA
10c
CORREOS DE CUBA
150
Saturnia pyri
ЈУГОСЛАВИЈА
60
MAGYAR POSTA
1.70
MAGYAR POSTA
SZINYEI MERSE PÁL SZERELMESPÁR
ČESKOSLOVENSKO
30h
150 let pražské konservatoře

डाक टिकट संबंधी शब्दावली

एडेसिव : ऐसे डाक टिकट जिन पर प्रकाशन के समय गोंद लगी होती है, जिससे वे कहीं भी चिपकाये जा सकें।

अल्बीनो : टिकट का वह भाग जिस पर गलती से स्याही न लग सकी हो। ऐसी गलती अक्सर उभरे डिजाइनवाले टिकटों पर होती है।

बाईसेक्ट : आधे कटे टिकट। अक्सर इन्हें तिरछा काटा जाता है, जैसे चार आने का कटा टिकट, जिसे लिफाफे पर दो आने के टिकट की तरह लगाया जाता है। अनेक देशों ने आपत्तिकाल में ऐसे टिकटों के प्रयोग की अनुमति दी थी।

बिशप मार्क : विख्यात गोल डाक मुहर जिसका हैनरी बिशप ने 1661 में प्रयोग किया था।

टिकट ब्लाक : चार या अधिक जुड़े टिकटों का ऐसा समूह जो एक पट्टी में न हों।

कैशे : विशेष अवसर पर लगायी जानेवाली मुहर, जैसे प्रथम दिवसीय कवर, अभियान अथवा विशेष हवाई उड़ान।

कैंसेलेशन : वह निशान जिससे नये डाक टिकट को विकृत किया जाता है। यह निशान मुहर, पेन के निशान, 'नमूना' जैसे शब्द तथा छेद आदि हो सकते हैं।

सेन्टर्ड : संतुलित डिजाइनवाला ऐसा टिकट जिसके बीच का डिजाइन चारों किनारों से समान दूरी पर हो। जिन टिकटों में बीच का डिजाइन केंद्र से इधर-उधर हट कर होता है, उसकी कीमत बहुत होती है।

कायल टिकट : वे डाक टिकट जिनको मशीनों से बेचने के लिए बनाया जाता है। ये मशीनें डाकघरों के बाहर लगी होती हैं। यह टिकट एक पांत में लपेटे हुए होते हैं। अक्सर इन टिकटों पर जल-चिह्न एक तरफ को होता है। इन टिकटों को "रोल" भी कहते हैं।

काम्बीनेशन कवर : ऐसा लिफाफा जिस पर एक देश से अधिक के टिकट लगे हों।

कवर : लिफाफा अथवा लपेटनेवाला कागज जिस पर टिकट लगाया जाता है।

डिफिनिटिव इश्यूज : किसी देश के सामान्य प्रयोग में आनेवाले टिकट। यह स्मृति अथवा दान आदि के निमित्त जारी किये गये टिकटों से भिन्न होते हैं।

डाई : गुदे हुए डिजाइन का धातु टुकड़ा। इसे मास्टर-डाई भी कहते हैं। यह डाई सामान्यतः टिकट छापनेवाली प्लेट पर किसी छाप को अंकित करने के लिए प्रयुक्त होती है।

एनटायर : पूरा लिफाफा, पोस्ट कार्ड अथवा लपेटनेवाला कागज जिस पर टिकट लगा हो।

एरर : सामान्य टिकट की तुलना में किसी प्रकार की गलतीवाला टिकट।

एसेस : टिकट का वह प्रस्तावित डिजाइन जो स्वीकृत न हुआ हो ।

फर्स्ट डे कवर : प्रथम दिवसीय लिफाफा जिस पर उस दिन जारी होनेवाला टिकट और प्रथम दिन की मुहर लगी होती है ।

फिस्कल : गैर डाक करों की वसूली के लिए जारी किया हुआ टिकट ।

इम्परफोरेट : वह टिकट जिस पर दनदाने नहीं और जिसे शीट से अलग करने के लिए काटना पड़े ।

इनवर्टेड : टिकट के डिजाइन का कोई भाग उल्टा छपना, जैसे किसी बादशाह के सिर अथवा मूल्य अंकों का उल्टा छप जाना ।

किसर : टिकट को विकृत करनेवाली गहरी लगी छाप ।

मिनिएचर शीट : विशेष रूप से तैयार टिकट शीट जिस पर कभी-कभी एक ही टिकट होता है । यह शीट अक्सर स्मारक के रूप में तैयार करायी जाती हैं ।

मिण्ट : मूल रूप में वह पूर्ण टिकट जिस पर गोंद भी लगी हो ।

मलरेडी : 1840 में ब्रिटेन में जारी हुए वे प्रथम डाक लिफाफे जिनके डिजाइन को विलियम मलरेडी ने तैयार किया था ।

ओवरप्रिंट : मूल मुद्रण के बाद टिकट पर लगाया गया निशान । अनेक संग्रही इस 'शब्द' का प्रयोग उन निशानों के लिए करते हैं जिनसे टिकट की कीमत नहीं बदलती । इस प्रकार 'सरचार्ज' शब्द से उसका भेद करते हैं ।

परफ़रेशन : मशीन से टिकट के किनारों पर छेद कर दिये जाते हैं, जिससे दो टिकटों के बीच छोटे-छोटे गोल सूराख बनते हैं, उनसे टिकटों को आसानी से अलग कर लिया जाता है । गोल सूराख करने पर वहाँ का कागज हट जाता है । जब टिकट को रूलेट किया जाता है तब उसके छेद का कागज हटता नहीं, केवल वहाँ कागज कट जाता है । परफ़रेशन या छिद्रण को मापते समय देखा जाता है कि दो सेंटीमीटर की जगह में कितने छेद किये गये हैं । इस प्रकार निछिद्र $12\frac{1}{2}$, निछिद्र 15 का मतलब है कि दो सेंटीमीटर में उतने छेद हैं ।

फिलातलिक ब्यूरो : डाक टिकट संग्रहियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न सरकारें डाकखानों से संलग्न जो ब्यूरो स्थापित करती हैं ।

प्लेट नंबर : कुछ देश डाक टिकटों को छापते समय उनके हाशिये पर छपाई प्लेटों की संख्या भी दे देते हैं । कुछ टिकटों पर ही प्लेट नंबर छपा रहता है । 1858 से 1880 के बीच ब्रिटेन में जो डाक टिकट जारी हुए उन पर प्लेट नंबर छपा था ।

पोस्टल हिस्ट्री : संसार की डाक व्यवस्था के बारे में समस्त जानकारी । इस इतिहास का तब से प्रारंभ हुआ है जब से संदेशों का आना-जाना हुआ । डाक इतिहास की जानकारी रखनेवाला डाक टिकट संग्रही भी हो, यह

जरूरी नहीं है।

पोस्टल स्टेशनरी : लिफाफे, पोस्ट कार्ड और वह लपेटन जिस पर टिकट छपे या उभरे रहते हैं।

क्वाड्रिल : जल-चिह्नवाला कागज अथवा ऐसा कागज जिस पर खड़ी-आड़ी हल्की रेखाएं बनी हों, जो छोटे-छोटे वर्गों का नमूना बनाती हों।

रूलेट : यह टिकटों को अलग करने का तरीका है। इसमें टिकट का कागज कटता है, पर उससे कागज का कोई भाग अलग नहीं होता।

स तेना : भिन्न प्रकार के डिजाइन अथवा रंगवाले दो जुड़वां टिकट।

तेत बेश : ऐसे जुड़वां दो टिकट जो आपस में उल्टे लगे हों।

विन्येत : टिकट पर बना केंद्रीय चित्र और खास डिजाइन।

वाटर मार्क : कागज तैयार करते समय उसके अंदर डाला गया जल-चिह्न।

यह जानना दिलचस्प होगा कि किस देश और डाक व्यवस्था ने अपना पहला डाक टिकट कब जारी किया। निम्न सूची में यह जानकारी दी गयी है।

1840 ग्रेट ब्रिटेन

1843 ब्राजील, जिनेवा, ज्यूरिख

1845 बासेल, अमरीका (पोस्ट मास्टर)

1847 मोरिशस, अमरीका (सरकारी), त्रिनिदाद

1848 बरमूडा

1849 बवेरिया, बेल्जियम, फ्रांस

1850 आस्ट्रिया, ब्रिटिश गयाना, हैनोवर, न्यू साउथ वेल्स, प्रशिया, सेक्सनी, सेलसविग-होलस्टीन, स्पेन, स्विटजरलैंड, विक्टोरिया

1851 बाडेन, कनाडा, डेनमार्क, हवाई द्वीप, न्यू ब्रुन्सविक, सारडीनिया, टस्कनी, बरटम्बर्ग

1852 बारबेडोस, ब्रुन्सविक, नेदरलैंड, भारत, लक्समबर्ग, मोडेना, ओल्डनबर्ग, पारमा, रियूनियन, रोमन राज्य, थर्न और टैक्सिस

1853 आशा अन्तरीप, चिली, नोवा सिकोशिया, पुर्तगाल, तस्मानिया

1854 फिलिपिन द्वीप, पश्चिमी आस्ट्रेलिया

1855 ब्रैमन, कोरिनटेस, क्यूबा और पोर्टोरिको, डेनिश वेस्ट इंडीज, न्यूजीलैंड, नार्वे, दक्षिण आस्ट्रेलिया, स्वीडन

1856 फिनलैंड, मैकलेनबर्ग—स्वेरिन, मैक्सिको, सेंट हेलेना, उरुगुए

1857 श्रीलंका, नेटाल, न्यू फौउंडलैंड, पेरू

1858 अर्जेन्टाइन रिपब्लिक, ब्यूनोस आयर्स, कोरडोबा, नेपल्स, मोल-

डाविया, पेरू, रूस

1859 बहामाज, कोलम्बिया रिपब्लिक, फ्रांसिसी उपनिवेश, हैम्बर्ग, इयोनियन द्वीप, लुबैक, रोमाना, सिसली, बेनेजूला, साइरालोन

1860 जमाइका, लाइबेरिया, माल्टा, न्यू कैलेडोनिया, क्वींसलैंड, सैंट लूसिया, पोलैंड, ब्रिटिश कोलम्बिया और बेनकूवर द्वीप

1861 बर्ग डोर्फ, कानफ़ेडरेट स्टेट्स, यूनान, ग्रेनेडा, नेपोलिटन प्रोविन्सेज, नेविस, प्रिंस एडवर्ड द्वीप, से. विसेंट, फाक द्वीप

1862 एंटीगुआ, हांगकांग, इटली (साम्राज्य), निकरागुआ

1863 बोलीवा, तुर्की साम्राज्य (रूसी डाकखाना), कोस्टारिका, तुर्की, वेनडन

1864 डच इंडीज, होल्सटीन, मेकलिनबर्ग—स्ट्रेलिज, सोरठ, शेल्सविग

1865 डोमिनिकन रिपब्लिक, इक्वेडोर, रूमेनिया, शंघाई

1866 बोलीविया, ब्रिटिश होण्डूरास, मिस्र, होण्डूरास, जम्मू-कश्मीर, सरबिया, वरजिन द्वीप

1867 चाइपस, ग्वाडलाजरा, हैलीगोलैण्ड, तुर्की साम्राज्य (आस्ट्रिया का डाकघर), सलवेडोर, स्ट्रेटसेटिलमैण्ट्स, तुर्की द्वीप

1868 एण्टीक्यूआ, अजोरिस, फरनेडो पो, मेडीरा, उत्तर जर्मन कानफेडेरेशन, ओरेन्ज रिवर कालोनी (ओ० एफ० एस०), फारस

1869 गेंबिया, हैदराबाद, सारावाक, ट्रांसवाल (एस० ए० आर०)

1870 अफगानिस्तान, एलसेस लोरेन, अंगोला, कुण्डिनामारका, फिजी, पेरागुए, सेंट क्रिस्टोफर, टोलिमा, सेंट टामस और प्रिंस द्वीप

1871 ग्वाटेमाला, हंगरी, जापान

1872 जर्मनी

1873 क्यूबा, कुराको, आइसलैण्ड, पोर्टोरिको (स्पेनी), सुरीनाम

1874 डोमिनिका, ग्रीक्वालैण्ड, जींद, लोगोस, मोण्टोनिग्रो, तुर्की साम्राज्य (इटालवी डाकघर)

1875 गोल्ड कोस्ट

1876 भोपाल, मोनसिरेट, पुंछ, जोहोर, कैम्पिश, मौजाम्बिक

1877 अलवर, केप वर्ड, नवानगर, समोआ, सन मैरिनो

1878 होण्डूरास, चीन, पनामा, पेराक, सुंगी उजौग

1879 भोर, बोसनिया, और हरजेगोविना, बुलगारिया, कोआका, फरीदकोट, लाबुअन, सिरमौर, टोबागो

1880 साइप्रस, पूर्वी रुमेलिया, राज-

पीपला

1881 झाइ टी, नेपाल, पुर्तगाली गिनी, सेलेंगर

1882 बैंकाक, (ब्रिटिश डाकघर), ताहिटी

1883 उत्तर बोर्नियो, स्याम

1884 ग्वोडेलोप, मकाम्रो, मैडेगास्कर (बी० सी० एन०), पटियाला, संतादेर, स्टैलालैंड, तुर्की साम्राज्य (जर्मन डाकघर), कोरिया

1885 ग्वानाकास्ते, ग्वालियर, मोनाको, नाभा, सेंटपेरी प्ररिमिववीलोन, दक्षिण बुलगारिया, तुर्की साम्राज्य (ब्रिटिश डाकघर), तुर्की साम्राज्य (फ्रांसीसी डाकघर), बेचुम्रानालैंड

1886 चम्बा, कोचीन, बेल्जियन कांगो, फ्रांसीसी गिनी, गैबून, जिबराल्टर, मार्टिनीक, न्यूरिपब्लिक दक्षिण अफ्रीका, टोंगा, इंदौर, तिमोर

1887 झालावाड़, सेनेगल

1888 अन्नाम और टोनिकिन,त्रिवांकुर, ट्यूनीसिया, वाघवान, जुलूलैण्ड, बामरा

1889 फ्रांसीसी मेडेगास्कर, इण्डोचीन, नोसी-बे, स्वाजीलैण्ड, पेहांग

1890 ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका, ब्रिटिश साउथ अफ्रीका (रोडेशिया), डियागो-स्वारेज. लीवर्ड द्वीप, सिकलिस

1891 फ्रांसीसी कांगो, मोरक्को (फ्रांसीसी डाकघर), नेगरी सेंबिलान, न्यासालैण्ड, प्रोटेक्टरेट (बी० सी० ए०) टियरा डे फ़्यूजोल

1892 अंगारा, अंजुआन, बेनिन, कोचीन, कुक आइलैण्ड, फ्रेंच गयाना, फुनचाल, होर्टा, आयवरी कोस्ट, मियोत, मुजांबिक को, निगर कोस्ट (ऑइल रिवर्स), ओबोक, ओशियानिक सेटिलमेंट्स, पोंटा देलगाडा, राजनंदगांव

1893 दतिया, इरीट्रिया, तंगानिका (जी० इ० ए०) जिबूटी

1894 अबीसीनिया, बूंदी, चरखारी, फ्रांसीसी सूडान, लोरेंजो मारकिस, सेंट मेरी व मेडागास्कर, जंबेसिया, जंजीबार, (फ्रांसीसी डाकघर), पुर्तगाली कांगो

1895 इनहमबाने, बुशाहिर, उगाण्डा, जंजीबार (ब्रिटिश)

1896 होंडा, तुर्की साम्राज्य (रूमानिया का डाकघर), मेडेगास्कर (फ्रांसीसी डाकघर)

1897 कैमरून, चीन (जर्मन डाकघर) धार, जर्मन दक्षिण पश्चिम अफ्रीका, ग्राण्ड कोमोरो, लासबेला, मार्शल द्वीप समूह, न्यासा, सूडान,

तोगो

1898 क्रीट (ब्रिटिश डाकघर), मोरक्को (ब्रिटिश डाकघर), पुर्तगाली अफ्रीका, हेसाली, जर्मनी, न्यूगिनी

1899 बोयाका, कैरोलीन द्वीप समूह, दहोमे, मिस्र (फ्रांसीसी डाकघर), गुआम, किशनगढ़, मोरक्को (जर्मन डाकघर), क्यूबा

1900 क्रीट, चीन (जापानी डाकघर), कोरिया (जापानी डाकघर), क्रीट (इटालवी डाकघर), फेडरेटेड मलाया स्टेट्स, जर्मन समोआ, कियउत्सू, मरियाना द्वीप समूह, उत्तरी नाइजीरिया, तुर्क और कियाको द्वीप समूह।

1901 मैगडेलेना, पपूआ (बी० एन० जी०) दक्षिणी नाइजीरिया, केमन द्वीप समूह, सिरीनाइका

1902 क्रीट (फ्रांसीसी डाकघर), फ्रांसीसी सोमाली कोस्ट, न्यू पेनरिन द्वीप समूह, स्पेनी गिनी

1903 एतूताकी, ब्रिटिश सोमालीलैण्ड, क्रीट (आस्ट्रियन डाकघर), पूर्व अफ्रीका और उगाण्डा, इलोबी, एनोबोन और कोरिस्को, सोमालिया मोरक्को (स्पेनी डाकघर), सेंट किट्स-नेविस, सेनेगेंबिया और निगर

1904 जयपुर, पनामा नहर क्षेत्र

1905 रियो दी ओरो

1906 ब्रूनेई, मालदीव, मौरिटेनिया, मोहली, अपर सेनेगल और निगर

1907 ब्रिटिश सोलोमन द्वीप समूह, मिडिल कांगो

1908 न्यू हैब्रिडीज

1910 त्रेगानू, त्रिपोलितानियाँ, दक्षिण अफ्रीका यूनियन

1911 गिलबर्ट और एलिस द्वीप समूह, कैलानतन, तिब्बत (चीनी डाकघर)

1912 कैंडा, लिटेस्टाइन, तिब्बत, एजीन द्वीप समूह

1913 अलबानिया, आस्ट्रेलिया, ओरछा, त्रिनिदाद, टोबेगो

1914 न्यू गिनी, नाइजीरिया

1916 कैप जुबी, नउरु, उबांगुई-चारी, रुआण्डा-उरुण्डी, सउदी अरब

1918 चैकोस्लोवाकिया, एस्टोनिया, फ्यूम, लैटविया, इराक, लिथूआनिया, फिलस्तीन, यूक्रेन, यूगोस्लाविया

1919 बातुम, जार्जिया, शंघाई (अमरीकी डाकघर), सीरिया

1920 केंद्रीय लिथूआनिया, डर्नजिग, आर्मीनिया, सिलेसिया, इनगरमेन लैंड, जार्डन, मेमल, सार, अपर बोल्टा, वालिस और फुतूना द्वीप समूह

1921 बड़वानी, निगर, टोगो

1922 एसेनशन, बारबुडा, ग्रायरलैंड, तोहाद

1923 कुवैत, लीग ग्राफ नेशंस, ट्रांस-कोकेशियन फेडरेशन

1924 ग्रलजीरिया, लेबनान, मंगोलिया, दक्षिणी रोडेशिया, स्पेनी सहारा

1925 ग्रलाउतीज, जुबालैंड, उत्तरी रोडेशिया

1926 उत्तरी मंगोलिया (तानूतोवा), यमन

1928 एनडोरा

1929 वेटिकन सिटी

1931 मोरवी

1932 इनीनी, मंचूरिया

1933 बहरीन, बसूतोलैण्ड

1935 बिजावर

1936 ग्रदन, बर्मा

1938 ग्रीनलैंड, हाटे, इटालवी पूर्व ग्रफीका

1939 ईडर, स्लोवाकिया

1940 फारो द्वीप समूह, पिटकेयर्न द्वीप समूह

1941 चेनल द्वीप समूह, क्रोशिया, इफनी

1942 जसदन, पीर ग्रौर मुकूला

1944 कैंपियोन, फाकलैंड द्वीप समूह डिपेंडेनसीज, मुस्कट, स्लोवेनिया

1945 बेनेजिया ग्यूलिया ग्रौर इस्ट्रिया, फारमोसा, इण्डोनेशिया गणतंत्र, वियतमाम

1946 फेजन, चीन (गणतंत्र), उत्तर वियतनाम, दक्षिण वियतनाम

1947 नारफोक द्वीप समूह, पाकिस्तान, ट्रीस्ट

1948 बहावलपुर, इजराइल, मलाका, पेनांग, परलिस, रियूक्यू द्वीप समूह, टोकेलू द्वीप समूह, पश्चिमी बर्लिन

1949 राजस्थान, पूर्व जर्मनी, पश्चिम जर्मनी

1950 कोमोरो द्वीप समूह, नेदरलैंड, न्यूगिनी

1951 कंबोडिया, गलापागोस द्वीप समूह, लाग्रोस, लिबिया, संयुक्त राष्ट्र-संघ

1952 पपुग्रा ग्रौर न्यूगिनी, त्रिस्तिनदा कुंना

1954 रोडेशिया ग्रौर न्यासालैंड

1956 ट्यूनिसिया

1957 कत्तार, तोगो (गणतंत्र)

1958 क्रिस्मस द्वीप समूह, मलागासे गणतंत्र

1959 ग्रपर वोल्टा गणतंत्र, गिनी (गणतंत्र), केंद्रीय ग्रफीकी गणतंत्र, कांगो गणतंत्र, ग्राइवरी कोस्ट गणतंत्र

1960 कांगो, कैमरून, रियोमुनी, दहोमे गणतंत्र, माली, मोरीतानिया

1961 ट्रशियल स्टेट्स

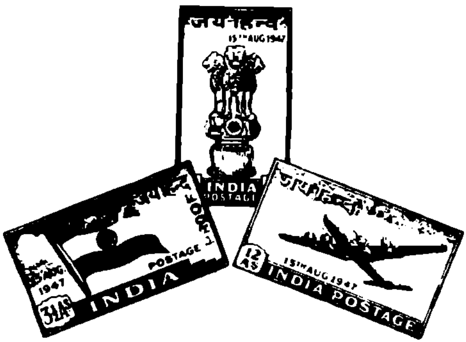
1962 भूटान, बुरुण्डी, रुवांडा, पश्चिमी न्यूगिनी

1963 मलेशिया, दक्षिण अरबी फेडरेशन, डुबाई, कीन्या, शरजा एण्ड डिपेंडेंसीज

1964 पूर्व अफ्रीका, अजमन, फुजीरा, आबूदाबी, रास-अल-खीमा, जांबिया, मलावी

1966 मनामा, बहरीन

1967 अंगुइला





INDIAN ELEPHANT
भारत INDIA
Rs 1
INDIA
INDO EUROPEAN TELEGRAPH LINE
1971
INDIA NATIONAL
15 nP
20 P.
TIGER
BLUE MAGPIE
Rs. 5
1869-1969-GANDHI CENTENARY
INTERNATIONAL CHAMBER
XXCONGRESS
UNESCO-25TH ANNIVERSARY
UNESCO
INTERNATIONAL
भारत INDIA
14-11
ABHISARIKA BY